|| ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ||

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 141 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका फरवरी– 2020 30/–प्रति

www.the-comforter.org

''कल्कि की एकमात्र तलवार सम्पूर्ण पृथ्वी को, आसुरिक प्रवृत्ति के भार से, पवित्र कर सकती है।''

– श्री अरविन्द

The Sword of **"Kalki"** can alone Purify the **"Earth"** from the burden of an obstinately **"Asuric"** humanity.

- Sri Aurobindo

FILE PHOTO

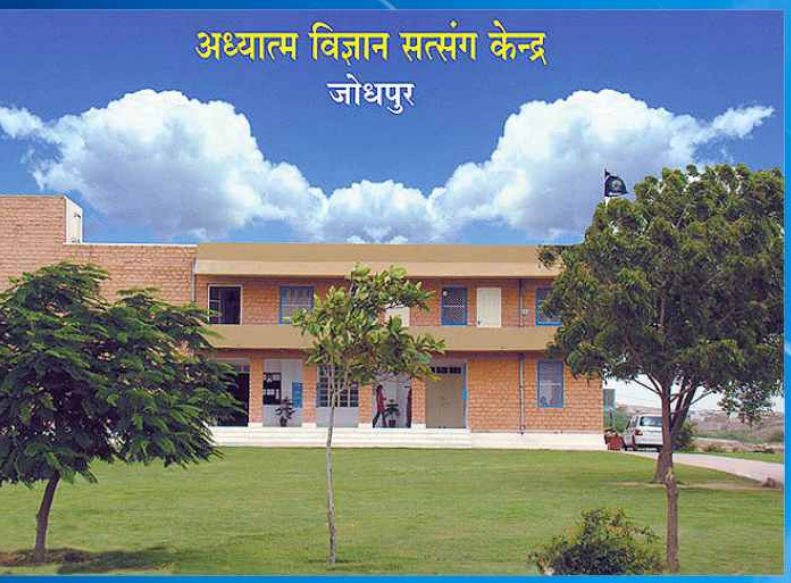

गुरुदेव के आदेश से सूर्यनगरी जोधपुर में आगमन

सन् 1993 में, मैं जोधपुर आया था। क्योंकि यहाँ की राज सत्ता, एक समय था, जब नाथों के आदेश से चलती थी। मैं एक नाथ का चेला हूँ। यहाँ नाथ कल्ट (संस्कृति) का बहुत भारी प्रभाव रहा है, इसीलिए मुझे गुरुदेव ने यहाँ आने का दिशा-निर्देश दिया। क्योंकि **गुरु का आदेश** था, इसमें बहुत अजीब चमत्कार दिखा। वास्तव में यह सूर्य नगरी है। यहाँ जो प्रकाश पैदा हुआ है, वह इस देश का काया पलट करेगा। क्यों करेगा ? क्या करेगा ? यह एक अलग सब्जेक्ट है।

मैं नाथ संप्रदाय की तरफ से, एक धार्मिक जगत् का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ, नाथ कल्ट क्या है ? इसका इंट्रोडक्शन (परिचय) करवा रहा हूँ। और **'इस वक्त, इस आश्रम की, इस जागृति की, इस देश को सबसे ज्यादा जरूरत है।'** धर्म पर बड़ा खतरनाक हमला है, बाहर से है, अंदर से है तो जो यहाँ रह रहे हैं, उनको तो हमने कुछ एडजस्ट (समायोजित) किया, कुछ हजम किया, मगर बाहर से जो निरंतर अटेक हो रहा है जिसे यह राजनैतिक लोग वो, सीमा पार से उग्रवाद कहते हैं, वह हिंसक है। एक अहिंसक हमला हो रहा है, बहुत भारी अहिंसक हमला हो रहा है जो आपको दिख नहीं रहा, वह सबसे ज्यादा खतरनाक है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ- 77 वाँ अवतरण दिवस, 24-11-2002

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) - 342001

संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube : Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY

Website : www.the-comforter.org • Email : avsk@the-comforter.org

"ॐ श्री गंगाईं नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 141 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका फरवरी – 2020

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 001
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

इन्हें कैसे मार सकता हूँ?.....4
नाम (मंत्र) की महिमा (सम्पादकीय).....5
आदेश की पालना.....6
अपार आध्यात्मिक सम्पति विरासत में.....7
नाम खुमारी एक सच्चाई है.....8–9
गुरुदेव सियाग सिद्धयोग (अनुभूतियाँ).....10–14
प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार.....15
मेरे अन्दर कर्ताभाव बिलकुल भी नहीं है.....16
एकमात्र सारभूत वस्तु.....17
सामान्य दिशा–निर्देश.....18
चित्र पृष्ठ.....19–22
रोगों से मुक्ति.....23–25
सद्गुरुदेव की चरण रज.....26
योग के आधार.....27
आध्यात्मिक सत्ता की अधीनता.....28
योगियों की आत्मकथा.....29
योग के बारे में.....30
सर्वशक्तिमान का हाथ.....31
Beginning of my Spiritual Life.....32
परमसत्ता का अवतरण.....33
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....34
नितान्त अकेला विश्व समर में.....35
सिद्धयोग.....36
शेष पृष्ठ सम्पादकीय.....37
ध्यान विधि.....38

www.the-comforter.org

इनकी तो मैं बहुत इज्जत करता हूँ !

"इन्हें कैसे मार सकता हूँ ?"

(समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के विषय में ब्रह्मा, विष्णु, महेश की वार्तालाप)

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ब्रह्मा

विष्णु

महेश

"मुझे जो कुछ भी प्राप्त हुआ, उसमें किसी प्रकार का मानवीय प्रयास या बुद्धि का लेशमात्र भी सहयोग नहीं रहा। अनायास सब कुछ मिलता ही गया।

इस युग का मानव अचम्भा करता है कि बिना प्रयास और बिना इच्छा के ऐसा कैसे सम्भव है ? परन्तु यह एक सच्चाई है। विभिन प्रकार की **शक्तियाँ** और **सिद्धियाँ** आती गई, परन्तु मुझे किसी अदृश्य शक्ति ने तनिक भी उनकी तरफ आकर्षित नहीं होने दिया।

इसी दौरान त्रिगुण मयी माया (**ब्रह्मा, विष्णु, महेश**) से साक्षात्कार हुआ। प्रथम व्यक्ति आगे सीधा चल रहा था, वह अप्रभावित सीधा चलता हुआ मेरे सामने से गुजर गया। उसके बारे में मुझे **विश्वकर्मा** की अनुभूति करवाई गई। दूसरे नम्बर पर चलने वाला व्यक्ति बहुत **चंचल** था। उसका हर अंग निरन्तर गतिमान था। क्षण भर में वह सब दिशाओं में देख लेता था। उसके बारे में मुझे **नारायण की अनुभूति** करवाई गई। इतने में तीसरा व्यक्ति यह कहता हुआ भागता आया कि **"सब को मार आया।"**

उस समय वे तीनों ठीक मेरे सामने से गुजर रहे थे। बीच वाले व्यक्ति ने कहा **मैं बताऊँ उसे मार सकते हो क्या ?** उसने कहा हाँ। इस पर उसने मेरी तरफ इशारा कर दिया। वे तीनों दक्षिण से उत्तर की तरफ जा रहे थे और मैं बांई तरफ (पश्चिम) पूर्व की तरफ मुँह किये रास्ते के किनारे थोड़ी दूरी पर खड़ा था। तीसरा व्यक्ति मेरी तरफ देखे बिना ही मेरी तरफ चल दिया। दो चार कदम आगे बढ़ कर ज्यों ही उसने मेरी तरफ देखा, संकोचवश शर्मिन्दा होकर ठिठक कर खड़ा हो गया और दूसरे नम्बर वाले व्यक्ति से बोला, **"इनकी तो मैं बहुत इज्जत करता हूँ, इन्हें कैसे मार सकता हूँ ?"** उसने जो कुछ कहा उसका ऐसा ही कुछ भाव था। इस पर दूसरे व्यक्ति ने उसे मजाक के रूप में शर्मिन्दा किया और तीनों चले गए।

इस प्रकार **'अगम लोक'** तक की सभी शक्तियों से साक्षात्कार और **प्रत्यक्षानुभूतियाँ** निरन्तर होती ही चली गई।"

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

भूल सुधार- जनवरी 2020 अंक के पेज नं-4 पर 'सत्येन **निष्ठते** जगत्' की जगह 'सत्येन **तिष्ठते** जगत्' पढ़ा जाएं।

नाम (मंत्र) की महिमा

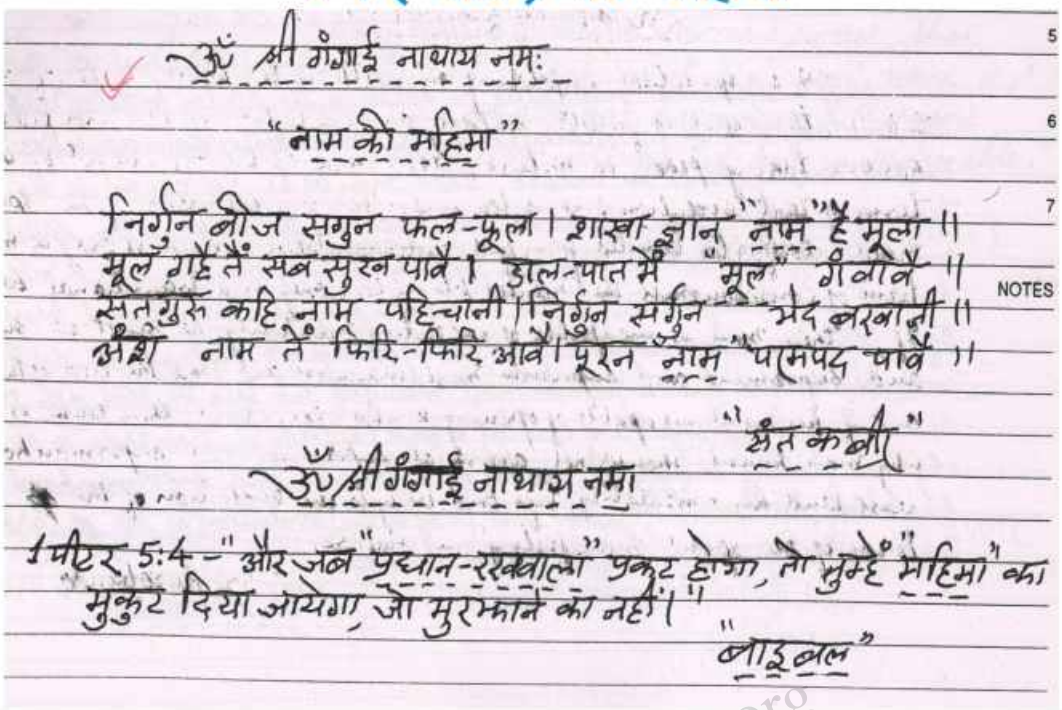
ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"नाम की महिमा"

निर्गुन बीज सगुन फल-फूला। शाखा ज्ञान "नाम" है मूला ॥
मूल गहे तें सब सुख पावै। डाल-पात में "मूल" गँवावै ॥
संतगुरु कहि नाम पहिचानी। निर्गुन सगुन भेद बखानी ॥
अंश नाम तें फिरि-फिरि आवै। पूरन नाम "परमपद पावै" ॥

"संत कबीर"

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

1 पीटर 5:4 - "और जब "प्रधान-रखवाला" प्रकट होगा, तो तुम्हें "महिमा" का मुकुट दिया जायेगा, जो मुरझाने का नहीं।"

"बाइबल"

बीज से मूल (जड़) और विशाल वृक्ष बनता है, वृक्ष के तने पर शाखाएँ फैलती हैं और शाखाओं पर पते, फूल और फल लगते हैं। पेड़ की जड़ों की सिंचाई करने पर, खाद आदि देने पर अच्छे फल लगते हैं। यदि अज्ञानता वश कोई व्यक्ति पेड़ की शाखाओं और पतों पर ही पानी डालता रहे तो थोड़े समय बाद वृक्ष सूख जाएगा और इस प्रकार मूल और पूरा वृक्ष नष्ट हो जाएगा। इसी प्रकार यह शरीर एक विशाल वृक्ष के समान है, जिसमें आत्मा अंतर्निहित है। इसके कल्याण के लिए समर्थ सद्गुरुदेव द्वारा बताए संजीवनी मंत्र का जप ही मुख्य आधार है। बिना सद्गुरु के, किताबों से लेकर या बिना गुरु के मंत्र लेकर जपना कल्याण कारी नहीं है और जीवन बारंबार आवागमन में रहता है। सद्गुरु द्वारा बताए मंत्र का सघन जप और ध्यान ही साधक को परमपद अर्थात् कैवल्य पद तक पहुँचा देता है और साधक को अपने निजस्वरूप का ज्ञान हो जाता है।

मंत्र विद्या हमारे देश में आदिकाल से चली आ रही है। शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धान्त पर ही हमारे ऋषियों ने मंत्र की रचना की है। **'शब्दब्रह्म'** से **'परब्रह्म'** की प्राप्ति का, हमारे दर्शन का सिद्धान्त पूर्णरूप से सत्य है। **यह हमारे दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है।** मंत्र विद्या का पतन नकली गुरुओं के कारण हुआ। **बिना गुरु दीक्षा के कोई मंत्र सिद्ध हो ही नहीं सकता।** गुरुदेव के माध्यम से जो परिवर्तन मानवता में आ रहा है, वह मात्र मंत्र शक्ति का ही प्रभाव है। शब्द ब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति के सिद्धान्त को ही गुरुदेव पूर्ण सत्य प्रमाणित कर रहे हैं। लोग कहते हैं, विज्ञान के इस युग में मंत्र की बात केवल अन्धविश्वासी लोग ही मानते हैं।

गुरुदेव के शब्दों- ''मैं तो चुनौती के साथ कहता हूँ कि मैं तो विज्ञान के शोधकर्ताओं से मिलने ही संसार में निकला हूँ। क्योंकि इस समय संसार में पूर्णरूप से तामसिक वृत्तियों का साम्राज्य है, इसलिए इन वृत्तियों के साधक ही संसार में नजर आ रहे हैं। ऐसे लोग नाटक दिखाकर लोगों को आकर्षित करते हैं, आज की भाषा में उन्हें जादूगर कहते हैं। ये लोग मात्र प्रेतपूजक होते हैं। इसी कारण आज मंत्र रूपी महाविज्ञान से लोगों का विश्वास उठ गया **जबकि जितनी शक्ति मंत्र में है, उसके समान दुनिया की कोई वस्तु शक्तिमान है ही नहीं।''**

मंत्र का रहस्य तभी समझ में आ सकता है, जब गुरु, शिष्य के सद्गुणों से संतुष्ट हो जाते हैं। जब **'गुरु'**, हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं, और **'मंत्र'** मुक्ति देता है, **''गुरु संतोष मात्रेण अन्यथा नहीं।''** इसी कारण आज गुरुदेव की मंत्र दीक्षा मानवता में बहुत बड़ा ही अद्भुत परिवर्तन ला रही है।

मंत्र को पुस्तक से पढ़ कर जितना भी जप किया जाये, उनका कुछ भी प्रभाव न होगा, उनमें 'क्रिया शक्ति' न होगी जब तक ***वे स्वयं गुरु द्वारा उपदिष्ट न हों।***

शेष पृष्ठ 37 पर ...

आदेश की पालना ही आध्यात्मिक पथ पर चलने का सर्वोत्तम सोपान है

भौतिक जगत् के अधिकतर काम आध्यात्मिक शक्तियों के पथ प्रदर्शन से करने का, एक प्रकार से आदि हो गया था। यही कारण रहा कि बहुत कम असफलता मिली। जिस काम में हाथ डाला, सफल हुआ। सन् 1982 में एक प्रकार से स्पष्ट आदेश मिल चुका था कि अब मजदूर संगठन से अलग हो जाओ। परन्तु मैंने उसकी तरफ अधिक ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार आदेश को न मानने के कारण मुझे भौतिक जीवन में भारी असफलताओं और निराशा का सामना करना पड़ा। जबकि पहले मैं जिस काम में हाथ डालता था, मेरा हर कार्य सफल होता था।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

अपार आध्यात्मिक सम्पति विरासत में

गुरुदेव अनायास ही दे गये

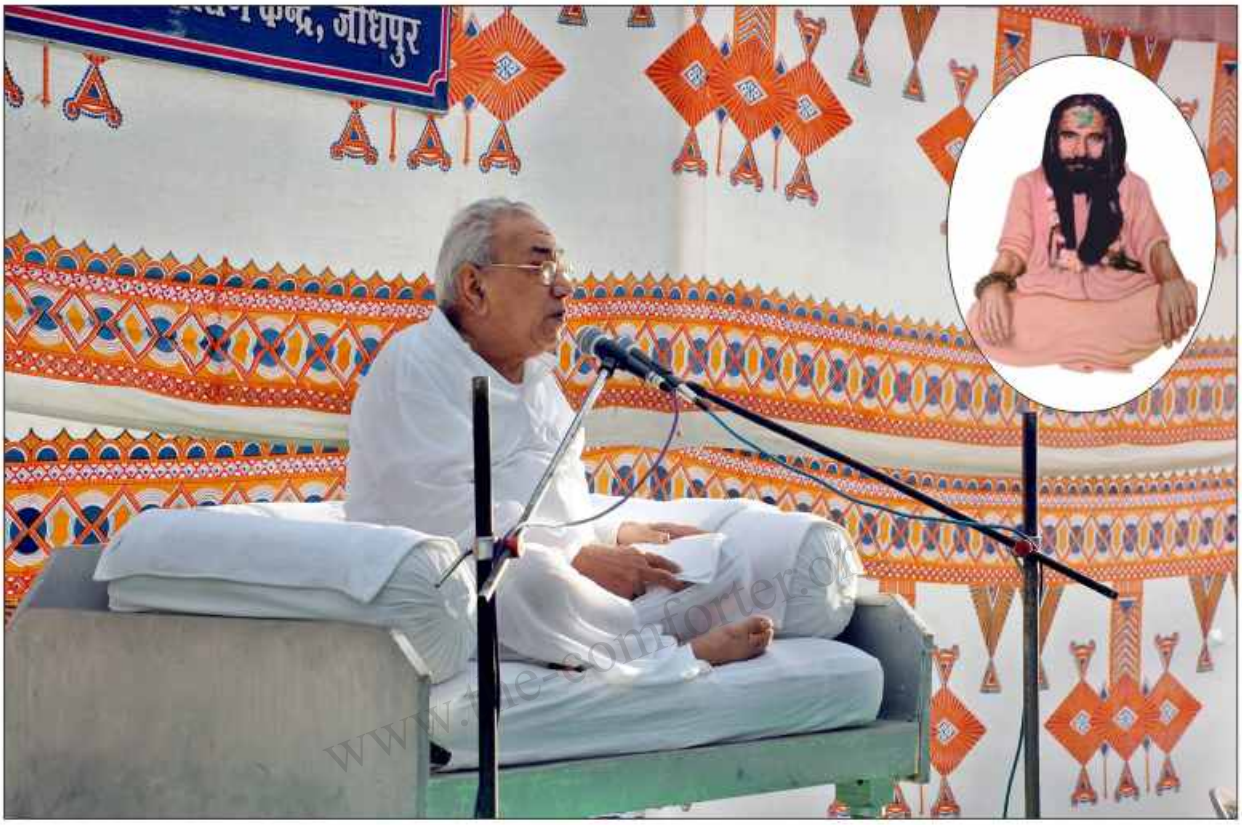

मुझे विषम परिस्थितियों में झोंक कर आध्यात्मिक आराधनाएँ करवा कर, कितनी शक्ति अर्जित करवा दी, उसका भी मैं हिसाब लगाने में असमर्थ था कि गुरुदेव (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) अनायास ही इतनी अपार आध्यात्मिक सम्पति विरासत में दे गये, उसका अनुमान लगाना ही मेरे लिए संभव नहीं।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

नाम खुमारी एक सच्चाई है, यह कोई काल्पनिक आनन्द नहीं।

मैं देख रहा हूँ, इस युग के मानव जब कबीर और नानक की **'नाम अमल'** और **'नाम खुमारी'** की बात सुनते हैं, या पढ़ते हैं तो उन्हें इस बात पर बिल्कुल ही विश्वास नहीं होता। अपने ज्ञान के अनुसार वे इस बात को ईश्वर के लिए श्रद्धा से काम में लिए हुए अतिशयोक्ति अलंकार के अतिरिक्त कुछ भी मानने को तैयार नहीं।

मैं लोगों की इस मान्यता के लिए उन्हें दोष नहीं दे सकता हूँ। क्योंकि आध्यात्मिक जगत्, सात्त्विक शक्तियों के ह्रास के कारण ही संसार के मानव की यह स्थिति है।

मनुष्य ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। उस परमसत्ता की अभिव्यक्ति मात्र इसी योनि से सम्भव है। मानव शरीर में ही वह असीम सत्ता अपने पूर्ण विकसित स्वरूप में स्थित हैं। इसीलिए सभी संतों ने इस योनि को दुर्लभ बताया है। परन्तु युग के गुण-धर्म के कारण असहाय मानव इसका स्वाद नहीं चख पाने के कारण इसको मात्र काल्पनिक या अतिशयोक्ति समझ रहा है।

मैंने करीब तीन हजार पर्चे प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार तथा नाम खुमारी के बँटवाये। पर्चे के अन्त में यह बात स्पष्ट रूप से छापी गई थी कि :-

''जो भी भाई-बहिन प्रत्यक्षानुभूति और नाम खुमारी के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासा शान्त करना चाहे, स्वयं सत्संग में सम्मिलित हो कर देखें।'' मुझे यह देख कर अचम्भा हुआ कि स्वामी

राम सुख दास जी के प्रवचन सुनने वाले को इसका विश्वास नहीं हुआ। मात्र एक जिज्ञासु ही मेरे पास आ सका। परन्तु जो एक जिज्ञासु आया, मैं उससे पूर्ण सन्तुष्ट हूँ। वह इस पथ का राही होना, इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मात्र भारत में ही उस परमसत्ता की आखिरी चिन्गारी बची हुई है, जिसको प्रज्वलित करके संसार भर में वह सात्त्विक प्रकाश फैलाया जा सकता है।

मुझे जो स्पष्ट इशारा था, वह सही निकला कि, **यह प्रकाश सर्वोच्च लोक से आ रहा है,** अतः पहले उन्हीं लोगों को चेतन करेगा। इस प्रकार संसार के शक्ति सम्पन बुद्धिजीवी लोग जब इस प्रकाश से चेतन होंगे तो नीचे इसका प्रकाश सहज ही फैल जायेगा। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियाँ और उस परमसत्ता का आदेश ठीक मेल खा रहा है। देश में जो **तमस** व्याप्त है, उसके बारे में श्री अरविन्द ने लिखा है :-

''यह कई कारणों से हैं। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के आने से पहले ही तामसिक प्रवृतियों और छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियों का जोर हो चला था। उनके आने पर मानो सारा तमस् ठोस बनकर, यहाँ जम गया।

कुछ वास्तविक काम होने से पहले यह जरूरी है कि यहाँ जागृति आये। तिलक, दास और विवेकानन्द इनमें से कोई साधारण आदमी न थे, लेकिन इनके होते हुए भी तमस् बना हुआ है।''। महर्षि अरविन्द की उपर्युक्त बात से यह बात स्पष्ट होती है कि **''अन्धकार इतना ठोस बन कर जम गया है कि उस अधिमानसिक देव के अवतरण के अलावा अब इसका कोई इलाज**

नहीं बचा है।'' मेरे विचार से भी इस प्रकाश का सबसे पहले भारत में फैलना जरूरी है। श्री अरविन्द को भगवान् ने अलीपुर जेल से छूटने से पहले जो आदेश दिया था, उसका भी यही अर्थ निकलता है। भगवान् का आदेश था कि :- **''तुम बाहर जाओ तो अपने देश वासियों को कहना कि तुम सनातन धर्म के लिए उठ रहे हो, तुम्हें स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, अपितु संसार की भलाई के लिए उठाया जा रहा है। जब कहा जाता है कि भारत वर्ष महान् है तो उसका मतलब है कि सनातन धर्म महान् है।**

इससे स्पष्ट है कि संसार को आकर्षित करने के लिए, पहले भारत उठना, चेतन होना जरूरी है, इसके बिना संसार को चेतन करना बहुत कठिन काम है। हम देखते हैं कि हमारे आम देशवासियों की एक प्रवृत्ति बन गई है कि वे पश्चिमी जगत् की आँख बन्द करके नकल करने में लगे हैं। दूसरी तरफ पश्चिमी जगत् के लोग भारत की गलियों की खाक छानते हुए शान्ति की खोज कर रहे हैं। बहुत ही विचित्र स्थिति है। **जिस अपार सात्त्विक धन के हम मालिक हैं,** उन्हें तो इसका कुछ भी ज्ञान नहीं, और समुद्रों पार से आकर विदेशी उसकी खोज कर रहे हैं, बहुत ही अजीब स्थिति है। मुझे अच्छी तरह याद है, ऋषिकेश में मुनि की रेति में गंगा के किनारे मैं खड़ा था। इतने में कुछ विदेशी भगवा वस्त्र पहने, वहाँ आकर खड़े हो गये। थोड़ी ही देर में कोट पेन्ट धारी कुछ सज्जन सपरिवार वहाँ आ गये। उनमें से एक सज्जन ने अंग्रेजी भाषा में उन विदेशियों से बात शुरू कर दी। क्योंकि मैं भी पास ही खड़ा था, इस लिए मैं भी सुनने लग गया।

हिन्दुस्तानी सज्जन ने कहा कि ''आप लोग बहुत समझदार और सभ्य लोग हैं, आप इन ठगों के चक्कर में कैसे फँस गये? ये लोग केवल आप लोगों से धन ठगने के लिए, विभिन्न प्रकार के स्वांग रच रहे हैं। इनके पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जिसके लिए आप ठगाये जा रहे हो''।

इस पर एक विदेशी बोला ''आप क्या कह रहे हो, मुझे समझ नहीं आ रहा है ऐसा लगता है आप पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं। क्या आपने इन संन्यासियों के पास आकर कभी जानने का प्रयास किया कि ये क्या कर रहे हैं? मैं देख रहा हूँ, हमारा दैनिक जीवन में जो खर्च होना चाहिए उससे एक पैसा भी अधिक नहीं लिया जा रहा है।

मैं जब हमारे देशवासियों की यह हालत देखता हूँ तो बहुत हैरानी होती है। हमारे देश के सभ्य और साधन सम्पन्न लोग पूर्ण रूप से धर्म से विमुख हो चुके हैं। जब तक उन्हें प्रत्यक्षानुभूति, साक्षात्कार और नाम खुमारी की अनुभूति नहीं करवाई जाती, चेतना असम्भव है।

शरीर के जिस अंग में बीमारी होती है, डॉक्टर चीर-फाड़ द्वारा उसी अंग का इलाज करते हैं, तभी पूरा शरीर स्वस्थ होता है। अतः हमें पहले इन्हीं बीमार लोगों का इलाज करना है, तभी चेतना सम्भव है।

हम देख रहे हैं, हमारे देश के प्रायः सभी राजनेता, वाम मार्गी तामसिक तांत्रिकों के चक्कर में चढ़े हुए हैं। ऐसे अनेक तामसिक तांत्रिक राज सत्ता का भयंकर दुरुपयोग करके अपनी काली शिक्षा का प्रचार-प्रसार करके देश में अन्धकार फैला रहे हैं। इस प्रकार समाज का जो वर्ग इन तामसिक लोगों के चक्कर में है तथा जो इन ढ़ोगियों से तंग आकर धर्म से विमुख हो चुका है, सर्वप्रथम उनका इलाज किये बिना देश में चेतना असम्भव है।

पश्चिमी जगत् के लोग सच्चाई को परखने और स्वीकार करने में कभी नहीं झिझकते। सबसे कठिन काम तो पूर्वाग्रह से ग्रस्त तथाकथित सभ्य और सम्पन्न लोगों का इलाज करना हैं। इनका इलाज होने पर पूरा शरीर स्वस्थ हो जायेगा। सत्ता धारी और इन सम्पन्न और सभ्य लोगों की कोई अधिक संख्या नहीं है।

जब वह परमसत्ता सक्रिय रूप से संसार के सामने प्रकट होकर, अपना कार्य शुरू कर देगी तो अन्धकार के दूर होने में कोई देर नहीं लगेगी। मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि हर परिवर्तन का समय सुनिश्चित है। समय आने पर सारी परिस्थितियाँ अनुकूल होकर थोड़े प्रयास से सारे कार्य सम्पूर्ण हो जायेंगे।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

1 मार्च 1988

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग

संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org), यू-ट्यूब चैनल (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY), फेसबुक (Avsk Jodhpur, Gurudev Siyag SiddhaYoga Avsk) व अन्य सोशल मीडिया से जानकारी प्राप्त कर जोधपुर मुख्यालय में वाट्सऐप व फोन पर हुई बातचीत के कुछ अंश-

आगरा (उ.प्र)
श्री कृष्णकांत-32 वर्ष
6.1.2020
नींद की समस्या से मुक्ति
ज्यादा ध्यान करने पर शरीर में गर्मी का बढ़ना, सिर का भारी रहना।

मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का वीडियो देखकर आज से करीब 20 दिन पहले मंत्र जप और ध्यान शुरू किया है। मैंने गुरुदेव के जोधपुर आश्रम पर भी फोन कर सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी प्राप्त की। मंत्र जप और ध्यान की विधि को समझकर, अब मैं सुबह-शाम 15-15 मिनट, मंत्र जप के साथ ध्यान करता हूँ और बाकी हर समय सघन मंत्र जप करता रहता हूँ। पहले मुझे नींद नहीं आने की बहुत समस्या थी। हमेशा 5 एमजी की टेबलेट खानी पड़ती थी, वो अब 1एमजी पर आ गई और डॉक्टर ने बोला है कि अब यह टेबलेट भी आपकी छूट जाएगी। अब मुझे मंत्र जप और ध्यान के कारण गहरी नींद आने लगी है।

जो मेरे समस्या थी उसमें तो मुझे सुधार हुआ लेकिन एक थोड़ी सी समस्या आ रही कि मैं 15 मिनट की जगह 20-20 मिनट ध्यान करता हूँ। उसके बाद से मेरा दिन भर सिर भारी रहता है। मुझे कुछ संदेह होने लगा कि गुरुदेव ने तो 15 मिनट ध्यान करने की आज्ञा दी है लेकिन मैं 20 मिनट कर रहा हूँ इसकी वजह से तो कहीं नहीं हो रहा है? मेरा मार्गदर्शन करें। मुझे क्या करना चाहिए?''

तब उनको बोला कि जो गुरुदेव ने कहा है वैसा करने से ही फायदा होगा। 15 मिनट ध्यान ही करें। यदि आपको लगता है कि सिर ज्यादा भारी रहता है तो 10 मिनट ही करें, कुछ समय के लिए ध्यान एक समय कर सकते हैं, बंद भी कर सकते हैं। मंत्र का जप हर समय करते रहिए। ज्यादा ध्यान करने से शरीर में गर्मी बढ़ जाती है। इसलिए जीवन की समरसता को बनाए रखने के लिए गुरुदेव द्वारा बताए मार्ग पर चलने में ही साधक का कल्याण है।

मधुबनी (बिहार)
श्री अशोक कुमार-50 वर्ष
9.1.2020

''मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर मंत्र जप के साथ ध्यान शुरू किया है। पिछले दो महिने से कर रहा हूँ लेकिन मुझे किसी भी प्रकार का बदलाव नजर नहीं आ रहा है। जबकि मैं आध्यात्मिक विचार धारा का व्यक्ति हूँ। मैं लगातार प्रयास कर रहा हूँ। अभी विशाखापट्टनम में सेना में सेवारत हूँ। कभी कभार सुबह या शाम को जब भी समय मिलता है तो 15 मिनट मंत्र वीडियो की आवाज के साथ ध्यान करता हूँ। मेरा मार्ग दर्शन करें, मुझे क्या करना है? जिससे कि मैं आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ सकूं!''

जोधपुर आश्रम की ओर से उनको विस्तार से समझाया गया कि आपको गुरुदेव द्वारा बताए संजीवनी मंत्र जप के साथ सुबह-शाम-15-15 मिनट खाली पेट ध्यान करना है। **ध्यान के समय मंत्र वीडियो चलाकर ध्यान नहीं करना है।** गुरुदेव द्वारा बताए मंत्र का मानसिक जाप करना है।

ध्यान के समय भी मंत्र जपना है और बाकी समय भी मानसिक जप करते रहना है। मंत्र जप ही आराधना में आगे बढ़ने का मुख्य साधन है।

उनको बताया गया कि आप सेना में अपनी ड्यूटी पर तैनात रहते हुए, हर समय मानसिक जप करते रहिए, इससे ही आपके जीवन में बदलाव आएगा। और किसी भी प्रकार के खान-पान में अपने बुद्धि के प्रयास से कोई बदलाव नहीं करना है। जो परिवर्तन आएगा, वो मंत्र जप और ध्यान से आएगा।

इस बात से उनको बहुत खुशी हुई और कहा कि ''मैं पिछले दो महिने से असमंजस की स्थिति में चल रहा था, आज मेरा समाधान हो गया। अब मैं सही विधि से आराधना कर पाऊँगा।''

www.the-comforter.org

जालंधर(पंजाब)

15.1.2020

मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर आराधना शुरू की। मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने गुरुदेव के बहुत सारे वीडियो देखे।

मुझे थोड़ा संदेह है कि -राम, कृष्ण, गुरुदेव, वाहेगुरु, जीसस, अल्लाह इत्यादि तो ध्यान की विधि में लिखा हुआ है लेकिन 'सो अहम्' नहीं लिखा है। मेरी राय है कि ये शब्द भी जोड़ दिया जाए-ध्यान की विधि में।

तब उनको समझाया गया कि 30 जुलाई 2009 से पहले मंत्र पर रोक थी। उस समय जिज्ञासुगण किसी भी ईश्वरीय नाम का जपते हुए यदि गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान करता था तो ध्यान लग जाता था।

लेकिन 30 जुलाई 2009 को गुरुदेव ने मंत्र को खुला कर दिया। उसके बाद गुरुदेव की दिव्य वाणी में मंत्र कभी भी सुन सकते हैं। गुरुदेव ने कहा कि **अपने पूर्ण विकास के लिए मंत्र तो यही जपना पड़ेगा तो ही पार पड़ेगी।**

इस प्रकार उनको सारी बातें समझ में आ गई।

बारगढ़ (उड़ीसा)

श्री सोमदत्त

23.1.2020

''मैं शक्तिपात दीक्षा लेना चाहता हूँ। मुझे कुण्डलिनी जागरण की विशेष जिज्ञासा है। मैं पिछले दो साल से लगातार हठयोग की साधना कर रहा हूँ। बहुत जगह भटक भटककर थक चुका हूँ। मुझे कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे शक्तिपात दीक्षा की सैद्धांतिक जानकारी है लेकिन कोई अनुभूति नहीं हुई है।

मैं एक बार जोधपुर आश्रम आकर आराधना करना चाहता हूँ। जहाँ गुरुदेव का आश्रम है, वहाँ एक विशेष शक्ति काम करती है। मैं वहाँ आकर शक्तिपात लेना चाहता हूँ।

मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव के बहुत सारे वीडियो सुने हैं। मुझे इसमें पूर्ण सच्चाई लगी और स्वतः योग होते देखकर मैं बहुत अभिभूत हुआ।

बालोड़ा बाजार (छत्तीसगढ़)

श्रीमती दीक्षेश्वरी सोनी,

उम्र-32 वर्ष

24.1.2020

''मैंने फेसबुक पर एक पोस्ट के कमेंट को पढ़कर, गुरुदेव के विषय में जानकारी प्राप्त की और मुझे देहरादून के एक गुरुभाई ने बताया कि जोधपुर में गुरुदेव का आश्रम है, वहाँ पर आप संपर्क करके पूरी जानकारी प्राप्त कर लीजिए। और आपको जो भी प्रचार सामग्री चाहिए, वो आप मँगवा सकती हो। इसलिए मैंने आज आश्रम में फोन किया है। मैं एक आँगनवाड़ी कार्यकर्ता हूँ। मैंने कई महिलाओं, पुरुषों व बच्चों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर मंत्र जप और ध्यान का बोला है। कई स्त्री-पुरुष ध्यान कर रहे हैं और उनको फायदा भी हो रहा है। मैं पिछले 4 महिने से मंत्र जप और ध्यान करती हूँ। पहले से मेरा जीवन बहुत अच्छा हो रहा है। मुझे कई प्रकार की अनुभूतियाँ हो रही है। हर समय एक आनंद की स्थिति बनी रहती है। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।

मेरी इच्छा है कि मैं अपने आँगनवाड़ी कार्य के साथ में ज्यादा से ज्यादा लोगों को सिद्धयोग दर्शन के बारे में बताऊँ।''

जोधपुर आश्रम से उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई तथा प्रचार-प्रसार के लिए साहित्यिक सामग्री भेजी गई।

दिल्ली

श्रीमती विजया

24.1.2020

फिर मुझे उत्थापन क्रिया हुई

''नाद सुनते-सुनते फिर मुझे उत्थापन क्रिया हुई और मुझे लगा कि मैं ध्यान में ऊपर उठ रही हूँ। इस बार मुझे बड़ा आनंद आ रहा था क्योंकि पिछली बार का मुझे अनुभव तो था ही। बस जो हो रहा था, उनका मैं आनंद ले रही थी। और पहली बार गुरुदेव ने कुछ आदेश दिया जो मैं आपको नहीं बता सकती। प्रथम बार मेरे अंदर से कुछ विशेष आदेश आया तो मुझे लगा कि वाकई में समर्थ सद्गुरुदेव है। गुरुदेव का एक वाक्य लिखा था कि 'गुरु आपके अंदर है। गुरु से अंदर से जुड़ो, वह आपको अंदर से जवाब देगा।' और आज मेरे साथ स्पष्ट घटना घट गई। जो अपने स्वयं के अंदर से आदेश आता है वही सत्य है। और कोई साधक चाहे बाहर से कुछ भी कहे, उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

मैं सोशल मीडिया पर ऐसे बहुत से लोगों को देखती रहती हूँ, जो अपना ज्ञान बाँट रहे हैं। मैं तो यही कहती हूँ कि सिर्फ गुरुदेव के आदेशों पर ही साधक को चलना चाहिए, अन्यथा वो आध्यात्मिक उत्थान से भटक जाते हैं।

मैं तो अब गुरुदेव से प्रार्थना करती हूँ और हर कार्य उनके हिसाब से होता है।

पहले मैं हनुमान जी की भक्ति करती थी और एक श्लोक था उनका वह बार बार बोलती थी कि **'कब हाजिर होंगे ?'** और अब मैं बहुत खुश हूँ कि उनके आराध्य मुझे मिल गये। अब गुरुदेव तो मुझे साक्षात् मिल गये।

अब मैं सिर्फ गुरुदेव की ही आराधना करती हूँ। मुझे प्रतिदिन कुछ न कुछ नई नई अनुभूतियाँ होती रहती हैं। आज मुझे पहली बार पता चला कि गुरुदेव अंदर से आदेश देते हैं, बस भरोसा केवल गुरुदेव पर ही रखना है।''

www.the-comforter.org

दोहा (कतर देश)
श्री चार्मिंग पटेल, उम्र-40 वर्ष
26.1.2020

संजीवनी मंत्र जप से मुमकिन हुआ -30 साल पुरानी गुटखे की लत से छुटकारा

फोन पर हुई बातचीत के अंश

''मैं मूलतः गुजरात राज्य के बड़ोदरा जिले का निवासी हूँ। पिछले कई वर्षों से दोहा में एक कंपनी में प्रोजेक्ट मैनेजर के रूप में काम कर रहा हूँ।

मैं पिछले 2-3 महिने से संजीवनी मंत्र जप के साथ सुबह-शाम 15-15 मिनट, खाली पेट ध्यान कर रहा हूँ। मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव के बहुत सारे वीडियो देखे हैं। उसमें जैसा गुरुदेव ने बताया है, वैसा मैं आराधना कर रहा हूँ।

आपको जानकर खुशी होगी कि 'गुरुदेव द्वारा बताए संजीवनी मंत्र के जप से मेरी 30 साल पुरानी सबसे खराब आदत थी, वो छूट गई है। उस आदत को लेकर मैं बहुत ही परेशान था और वह आदत थी- **गुटखा खाने की।**

जब मैं करीब 10-11 साल का था तब से गुटखा खाना शुरू किया था।

अब करीब 40 दिन हो गए हैं, मैंने गुटखा नहीं खाया और मुझे जरूरत भी नहीं पड़ी। शरीर को अंदर से गुटखे की लत की आवश्यकता ही महसूस नहीं हो रही है। मुझे विश्वास भी नहीं हो पा रहा है कि यह सब परिवर्तन इतना सटीक और तीव्र गति से कैसे आया?

वरना 30 साल से कोई व्यक्ति नशा कर रहा है, और अचानक छोड़ दें, यह किसी कीमत पर संभव नहीं हो सकता ! नशे की लत पूरी बॉडी को जकड़ लेती है इसलिए व्यक्ति को नशा करना ही पड़ता है।

विज्ञान के हिसाब से यह बिलकुल भी संभव नहीं, क्योंकि बिना किसी मेडिसिन के नशा छूटने का बदलाव आया है, विज्ञान के लिए असंभव है लेकिन समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के बताए **संजीवनी मंत्र के सघन जप से सब कुछ मुमकिन है।**

मैंने अपने पूरे परिवार को भी सद्गुरुदेव सियाग जी के सिद्धयोग दर्शन के बारे में पूरा बताकर ध्यान शुरू करवा दिया है। सबको अच्छे अनुभव हो रहे हैं। आज आश्रम में बात करके बहुत अच्छा लगा और मुझे महसूस हो रहा है कि मैं किसी अपने से बात कर रहा हूँ।''

जब उनको पूछा गया कि आपको गुरुदेव के बारे में जानकारी कैसे मिली तो उन्होंने जो बताया वो बड़ा ही रोचक लगा- ''मेरी शुरू से ही आध्यात्मिक और धार्मिक भावना रही है। आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के लिए मैं प्रयास करता ही रहता था। इसी जिज्ञासावश मैं यू-ट्यूब पर सर्च करता रहता था तो एक महिला से **'क्लीम्'** मंत्र की दीक्षा ले ली और उस मंत्र को जपता रहता था। मेरी जिज्ञासा थी इसलिए मुझे अच्छा लगता था। लेकिन जीवन में कोई खास बदलाव नहीं आया। काफी समय तक मैं उनके बताए मंत्र के अनुसार आराधना करता रहा।

फिर मैंने उनको बताया कि मुझे कोई खास अनुभव तो नहीं होता है तो उसने मुझे वही मंत्र दिया जो गुरुदेव देते हैं और मानसिक रूप से जपने का बोला। मैंने वो भी करके देखा लेकिन मुझे कोई अनुभूति नहीं हुई। मेरी जिज्ञासा शांत नहीं हुई और मैं प्रयास करता ही रहता था। फिर एक दिन मुझे सफलता मिल ही गयी और गुरुदेव का मंत्र वीडियो मिल गया। मैंने पूरा वीडियो देखा और गुरुदेव के बताए अनुसार ज्योंहि मंत्र जप के साथ ध्यान शुरू किया तो मेरा ध्यान लग गया। यौगिक क्रियाएँ होने लगीं। मुझे असीम आनंद की अनुभूति हुई। तब मुझे लगा कि कोई कुछ भी करे, जिनके दिल में परम सत्य को पाने की जिज्ञासा है-भगवान् उनके घर आ ही जाते हैं। इस प्रकार मुझे सद्गुरुदेव श्री सियाग जी महाराज की पावन प्राप्ति हुई।

उसके बाद यू-ट्यूब पर गुरुदेव के बहुत सारे वीडियो सुने और समझे। हमेशा नित नई नई अनुभूतियाँ भी होने लगी।

मेरा पहले से ही शरीर का भार ज्यादा है, लेकिन ध्यान के बाद भी मेरा भार बढ़ रहा है तो मुझे क्या करना चाहिए?

मुझे कुण्डलिनी जगाने के लिए क्या करना पड़ेगा? मुझे इसकी जिज्ञासा है। तब उनको बताया गया कि कुण्डलिनी जागरण होने पर ही आपको नशे की लत से छुटकारा मिला। कुण्डलिनी जागरण से सबसे पहले शरीर के विकारों का नाश होता है।

उनको बताया गया कि आपको तो केवल गुरुदेव द्वारा बताए पथ पर ही चलना है बाकी सब कुछ परिवर्तन अपने आप होता जाएगा।

पिछले एक महिने से मुझे प्रेरणा हो रही है कि मुझे सनातन धर्म के उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। वर्तमान परिपेक्ष में भी देश दुनिया में बहुत कुछ बदलाव महसूस कर रहा हूँ।

अब मेरी वाणी में भी एक निखार आया है कि 'मैं जिनको भी बताता हूँ तो उसका तुरंत प्रभाव पड़ता है जबकि पहले तो ऐसा नहीं था तो मुझे लगा कि गुरुदेव तो पूरा जीवन ही बदलने वाले हैं।'

तब उनको बताया गया कि गुरुदेव के माध्यम से ही सनातन धर्म मानव जाति में मूर्तरूप ले रहा है। इसलिए **आप ज्यादा से ज्यादा गुरुदेव की वाणी का प्रचार-प्रसार करें।** जब मानव जाति में संजीवनी मंत्र के जप और गुरुदेव की तस्वीर से बदलाव आएगा तो स्वतः ही मान जाएंगे।

फिर उन्होंने कहा कि **''मैं जब भी भारत आऊँगा तो जोधपुर आश्रम आकर गुरुदेव के आसन पर नमन् करूँगा। यदि आप मुझे कुछ प्रचार सामग्री** कतर भेज दें तो मैं वहाँ पर भी प्रचार कार्य शुरू कर दूँ।''

जोधपुर आश्रम से उनको कुछ प्रचार सामग्री भेजी गई। ❖❖❖

संजीवनी मंत्र जप और गुरुदेव सियाग के चित्र पर ध्यान करने का अद्‌भुत प्रभाव

अन्तर्जगत् की अद्‌भुत अनुभूतियाँ

परम पूज्य समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग और बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) के पावन चरण कमलों में कोटि-कोटि नमन्।

मैं पिछले अंक में भी अपना अनुभव बतला चुका हूँ। गुरुदेव की परम कृपा से आगे जो अनुभव हुए हैं **उनको बतलाना तो बड़ा असंभव है,** परंतु गुरुदेव की कृपा से उनमें से कुछ अनुभव आपके सामने रखने का प्रयास कर रहा हूँ।

कई दिनों से ध्यान में नीला प्रकाश दिखाई दे रहा है, उसके बाद नीले प्रकाश के अंदर सफेद प्रकाश दिखाई देता है, उस सफेद प्रकाश में कभी गुरुदेव तो कभी दादा गुरुदेव के दर्शन होते हैं। वह नीला प्रकाश और सफेद प्रकाश एक दूसरे में समाता हुआ सा प्रतीत होता है। कभी-कभी ध्यान में शिवलिंग दिखाई देता है।

एक दिन जब मैं ध्यान में था तो एक बहुत बड़ा पुरुष दिखाई दिया, इतना बड़ा कि मैं केवल उनके पैर ही देख सका, ऐसा लगा मानो प्रभु के विराट रूप के दर्शन हो रहे हो। एक दिन ध्यान में महाकाली के दर्शन हुए। कभी झरने दिखाई देते हैं, कभी-कभी बहुत बड़ी बड़ी पर्वतमालाएँ दिखाई देती हैं। नदियाँ दिखाई देती हैं। बड़े-बड़े उपवन दिखाई देते हैं। अनंत ब्रह्मांड दिखाई देता है। कभी प्रात:काल सूर्योदय होता है, ऐसा दृश्य, सिंदूरी रंग धारण किए हुए पूर्व दिशा, मानो सूर्य देव उदय हो रहे हों ! एक दिन ध्यान में घोड़ों का झुंड और हाथी दिखाई दिए।

एक दिन जैसे ही ध्यान में बैठा तो गर्दन नीचे झुक गई, ठोड़ी कंठकूप में धंस गई और नीचे मूलबंध लग गया, उसके बाद उड्डियान बंध लग गया, पेट पीछे की ओर खिंच गया, तब ऐसा लगता था कि नाभी की वायु ऊपर की ओर खिंच रही है। बाह्य कुंभक लगा, पूरा शरीर नीचे से लेकर ऊपर तक ठंडा पड़ गया, कंठ एकदम ठंडा पड़ गया, हाथों में पसीने आने लगे, गहरा ध्यान लगा, बाहर की आवाज सुनाई दे रही थी परंतु मन एकदम शांत था।

15 जनवरी 2020 के बाद ध्यान में और ज्यादा आनंद बढ़ गया जैसे ध्यान करने बैठता हूँ, उसी समय गले से (हूं हूं) आवाज आना प्रारंभ हो गया, कभी-कभी तो (आ आ) की आवाज आती है। तर्जनी और मध्यमा उंगलियों से आँखें बंद हो जाती हैं, अनामिका और कनिष्ठका उंगलियाँ नाक के ऊपर होती हैं और दोनों हाथों के अँगूठे से कान बंद हो जाते हैं और भ्रामरी प्राणायाम भी प्रारंभ हो जाता है। दाहिने कान से अनहद नाद भी सुनाई देता है, बड़ा आनंद आता है।

एक-दो दिन से आज्ञाचक्र में वाइब्रेशन हो रहा है। दोनों आँखें ऊपर की ओर खिंचती है, ऐसा लगता है कि मानो आँखें घूम रही हैं। माथा ऊपर की ओर खिंचता है, चेहरे की अजीबोगरीब आकृतियाँ बनती हैं, कभी नाक ऊपर की ओर खिंचती है, कभी मुँह खुल जाता है और जबड़े पीछे की ओर खिंचते हैं, कभी जीभ बाहर निकलती है और उलटकर तालु से लग जाती है, कभी मुँह में जीभ पीछे की ओर खिंचती है।

ध्यान में आँखों के बंद होने पर भी दोनों हाथों की उंगलियों से आँखों पर दबाव डाला जाता है फिर दोनों आँखों से आज्ञा चक्र पर ध्यान केंद्रित होता है। ध्यान में नीला प्रकाश दिखाई देता है। उस नीले प्रकाश के अंदर चमकते हुए सफेद सितारे दिखाई देते हैं, उन सितारों से कभी गुरुदेव कभी दादा गुरुदेव के दर्शन होते हैं। एक दिन तो बांसुरी बजाते हुए भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन हुए।

ध्यान में इतना आनंद आता है कि सुबह का ध्यान होने के बाद इच्छा होती है शाम कब होगी ? जिससे कि ध्यान करूं और नई-नई अनुभूतियाँ प्राप्त कर सकें।

कुछ अनुभूतियां तो ऐसी हैं कि जिनका वर्णन करने के लिए शब्द ही नहीं मिल रहे हैं।

स्वप्न में मैंने बहुत बड़ा काला सर्प देखा। वह सर्प शांत भाव से सो रहा था। मुझे देख कर भाग भी नहीं रहा था लेकिन ऐसा सर्प मैंने पहले कभी नहीं देखा !

एक दिन ध्यान में दादा गुरुदेव की समाधि के दर्शन किए। समाधि के अंदर शिवलिंग दिखाई दिया। वह दाएं और बाएं हिलने लगा। थोड़ी ही देर में वह वहाँ से उठा और मेरी तरफ आने लगा। मुझे लगा कि मेरी गोद में आ जाएगा

www.the-comforter.org

परंतु ऐसा नहीं हुआ और वह आकाश में चला गया और आकाश में जोरों से घूमने लगा। उसके ऊपर पुष्प पड़े हुए थे। पुष्प आकाश में झड़ने लगे। मुझे बड़ा ही आनंद आने लगा और कुछ देर के बाद वह शिवलिंग वापस जाने लगा और दादा गुरुदेव की समाधि में अपनी जगह पर, जाकर स्थिर हो गया। इस दृश्य को देख कर मेरा मन-मयूर नाचने लग गया, अत्यधिक प्रसन्नता हुई और मैंने श्री गुरुदेव और दादा गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि कोटि प्रणाम किया।

मैं जब से गुरुदेव से जुड़ा हूँ तब से अपनी आराधना के साथ गुरुदेव के मिशन का प्रचार-प्रसार भी करता हूँ।

मेरे पापा जी और मेरी मम्मी ने ध्यान करना प्रारंभ कर दिया। मेरे पापा जी को कमर में दर्द था। गुरुदेव का ध्यान करने से उनके कमर का दर्द दूर हो गया, उनकी गर्दन में भी दर्द था, गर्दन भी सही हो गई और उनको स्वप्न में काले सर्प के दर्शन हुए और स्वप्न में ही पापा जी ने देखा कि वे किसी पर्वत पर ऊपर चढ़ते हुए जा रहे हैं। कई प्रकार की अनुभूतियाँ उन्हें ध्यान में प्राप्त हो रही हैं। पापा जी को भी ध्यान के समय अनेक प्रकार के प्राणायाम होते हैं, बंध लगते हैं और मुद्राएँ भी होती हैं। ध्यान में दिव्य नीला प्रकाश भी दिखाई देता है। पापा जी को अजपा भी प्रारंभ हो गया है।

मम्मी जी के पेट में समस्या थी, गुरुदेव का ध्यान करने से पेट की समस्या दूर हो गई है और उनके गर्दन की क्रियाएँ होती हैं। उन्हें ध्यान में गुरुदेव और दादा गुरुदेव के दर्शन भी होते हैं। मम्मी जी भी रोजाना ध्यान करती है।

मेरी एक भतीजी है जिसका नाम है-भारती शर्मा, उसकी आंतों में छाले हो गए थे। उसने भी ध्यान करना प्रारंभ किया। गुरुदेव की कृपा से उसका दर्द दूर हो गया। ध्यान में शिवलिंग के दर्शन हुए, गुरुदेव के दर्शन हुए और एक दिन रात को सोते समय रीढ़ की हड्डी में अचानक से ऐसा लगा कि कोई एनर्जी ऊपर की ओर चल रही है। उसे भी अजपा प्रारम्भ हो गया है। एक दिन मेरे पास आई कहने लगी कि मैं अभी ध्यान कर रही थी तो अचानक से एक शक्ति पुँज सिर की ओर गया और ऐसा लगा कि सिर के दो टुकड़े हो गए और सिर के अंदर दूधिया प्रकाश ही प्रकाश हो गया। मैं तो डर गई लेकिन मैंने आँखें नहीं खोली।

अब ऐसा लग रहा है कि सिर में कमल का पुष्प खिल रहा है और पूरा शरीर एकदम हल्का हो गया है। मुझे तो डर लग रहा है परंतु चारों ओर देखती हूँ तो मुझे अच्छा भी लग रहा है, ऐसा कहकर वह घर चली गई। मैं ध्यान करने के लिए बैठने वाला था कि अचानक वह वापस आई और कहने लगी चाचा जी जब मैं पढ़ने बैठी तो मैं हिलने लगी और मेरी किताब भी हिलने लगी मेरी धड़कन बढ़ रही है पढ़ने में मन नहीं लग रहा।

मैंने गुरुदेव की फोटो उसके सामने रखी और उससे कहा बेटा आप गुरुदेव से निवेदन करो कि मैं पढ़ने वाली बच्ची हूँ। मैं मातृशक्ति कुण्डलिनी देवी का वेग सहन नहीं कर पाऊँगी। गुरुदेव अब इन अनुभूतियों को शांत करें, उसने ऐसी प्रार्थना की और मैं भी ध्यान में बैठ गया। मैंने ध्यान में गुरुदेव से मेरी भतीजी के लिए प्रार्थना की। भतीजी अपने घर जा चुकी थी। ध्यान पूर्ण होने के बाद मैं उससे मिलने गया तो मैंने देखा वह पढ़ रही है। मैंने पूछा अब कैसी हो उसने कहा चाचा जी अब मेरा पढ़ने में मन लग रहा है। अब मुझे डर नहीं लग रहा। ऐसी अनुभूतियाँ हैं जो गुरुदेव के द्वारा मेरी भतीजी को कराई।

गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

इसके अलावा मेरे साथ में श्रीमद्भागवत में काम करने वाले पंडित जी हैं, उन्होंने भी गुरुदेव का ध्यान किया, उनसे भी आज मेरी बात हुई। उन्होंने कहा कि शाम के ध्यान में, मैंने काले सर्प को देखा। वह मेरे आगे आगे दौड़ रहा था। मैं उसके पीछे पीछे दौड़ रहा था लेकिन मैं उसे पकड़ नहीं सका। यह मेरी बहुत अच्छी अनुभूति थी। मैं गुरुदेव के ध्यान में बहुत ही अच्छा महसूस करता हूँ। मेरा तो जीवन ही धन्य हो गया। न जाने कितने जन्म जन्मांतर से मैं भटक रहा था। आज पूर्व जन्म के किसी पुण्य के उदय होने के कारण ही मुझे इस जन्म में गुरुदेव की प्राप्ति हुई है।

मेरा छोटा भाई है-पंकज शर्मा वह भी गुरुदेव का ध्यान करता है। उसे भी ध्यान में गर्दन की क्रियाएँ होती हैं, शारीरिक क्रियाएँ होती हैं। उसने कहा मेरे शरीर का दर्द दूर हो गया। उसे पहले दिन से ही क्रियाएँ होने लगीं। एक दिन मधुमक्खी ने उसे दंश दे दिया। गुरुदेव की कृपा से उसे सूजन नहीं आई। ऐसा गुरुदेव के ध्यान का प्रभाव है। अब वह रोजाना ध्यान करने लगा है। जय गुरुदेव।

मैं गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि कोटि प्रणाम करता हूँ। कोटि-कोटि नमन् करता हूँ।

-विजय कृष्ण शास्त्री
ग्राम पोस्ट बल्लभगढ़
जिला भरतपुर
राजस्थान

www.the-comforter.org

प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार

तामसिक शक्तियों का एक छत्र साम्राज्य होने के कारण, इस युग का मानव इसे समझने में असमर्थ है। इसमें इस युग का मानव दोषी नहीं है, यह तो इस युग का गुणधर्म है।

अगर संसार की ऐसी स्थिति नहीं होती तो उस परमसत्ता का अवतरण सम्भव नहीं होता। जब मैं **सूक्ष्म शरीर** और **कारण शरीर** तथा **आत्मा** की बात करता हूँ और उसकी **प्रत्यक्षानुभूति** और **साक्षात्कार** को सम्भव बताता हूँ तो इस युग के लोग **हतप्रभ** मेरी तरफ ताकने लगते हैं।

इस प्रकार मैं देखता हूँ कि अगर मैंने माया के लोकों के परे के **सत् लोक, अलख लोक और अगम लोक की बात करनी प्रारम्भ कर दी तो इस युग का मानव पूर्ण रूप से विद्रोह कर देगा।** जब माया के क्षेत्र में रहते हुए होने वाली अनुभूतियों का इस युग के मानव को ज्ञान होना असम्भव लगता है तो मायातीत लोकों की तो बात पूर्ण रूप से काल्पनिक और असत्य मानेगा। मुझे उपर्युक्त आध्यात्मिक जगत् के विभन्न लोकों की जानकारी और प्रत्यक्षानुभूति काफी समय से हो रही है।

इस प्रकार की सभी अनुभूतियाँ भौतिक जगत् में भी सत्यापित होती रही हैं। परन्तु मैं दूसरों को यह अनुभूति करवाने की स्थिति में नहीं था। गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद, जब मेरे से सम्बन्धित लोगों को ये सभी अनुभूतियाँ होने लगी तो मुझे बहुत आश्यर्य होने लगा। क्योंकि मैं हिन्दू धर्म के दार्शनिक पक्ष से, पहले से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ था, इसलिए मैं इसे बिलकुल नहीं समझ सका।

दर्शन शास्त्र के कई लोगों से सम्पर्क करने पर पता लगा कि जब सच्चा आध्यात्मिक संत अपने अन्तिम समय के निकट पहुँच जाता है तो उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाने के कारण वह त्रिकाल दर्शी हो जाता है। इस प्रकार शक्तिपात द्वारा सभी आध्यात्मिक शक्तियाँ किस व्यक्ति को सौंप कर जाना है, इसका पूर्ण ज्ञान उसको हो जाता है। अत: वह अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर उसे अपने पास बुला कर **समर्पण** करवाता है, और इस प्रकार समर्पण के समय शक्तिपात के सिद्धान्त द्वारा अपनी सारी शक्तियाँ उस व्यक्ति में प्रविष्ट कर देता है।

परन्तु जब तक वह संत भौतिक रूप से इस संसार में मौजूद रहता है, सारी शक्तियाँ मूल रूप से उसी के अधीन कार्य करती हैं। ज्यों ही वह शरीर त्याग करता है, सारी शक्तियाँ उस व्यक्ति में पूर्ण रूप से प्रविष्ट कर जाती हैं, जिसमें उस संत ने शक्तिपात किया था। इस प्रकार उस व्यक्ति के द्वारा उन शक्तियों का चमत्कार भौतिक रूप से जब प्रकट होने लगता है तो धीरे-धीरे सारी स्थिति उसके समझ में आती जाती है।

इस प्रकार **''मेरे गुरुदेव''** ने अनायास ही कृपा करके विरासत में मुझे इतना अपार **''आध्यात्मिक धन''** दे दिया है, जिसका पूर्ण ज्ञान मुझे आज की स्थिति में तो नहीं है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मेरे अन्दर कर्ताभाव बिल्कुल भी नहीं है।

कर्ता मात्र ईश्वर को मानना, और भौतिक संसाधनों के बिना इस दर्शन का प्रचार-प्रसार

''जो कुछ होना है वह पूर्व नियोजित है, उन्हीं अनुभूतियों के आधार पर, मैं हर क्षेत्र में भौतिक साधन की कुछ भी परवाह किये बिना निकल पड़ता हूँ।

आज तक की प्रत्यक्षानुभूतियों ने मुझे पूर्ण रूप से आश्वस्त कर दिया है। भौतिक साधनों के अभाव में कोई भी कार्य नहीं रुक सकता। प्रारम्भ से लेकर आज तक की मेरी वस्तु स्थिति पर, जब मैं एक साथ नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि मेरे माध्यम से जो सत्ता अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रही है, उसमें मेरी बुद्धि और मेरी किसी भी शक्ति के सहयोग का **'रत्ति भर'** भी योगदान नहीं रहा है।

मेरे न चाहते हुए भी वह परमसत्ता मुझे अपनी मर्जी से नचा रही हैं। इसी कारण जो कुछ भी मेरे माध्यम से करवाया जा रहा है, इसलिए मेरे अन्दर **कर्ताभाव** बिल्कुल भी नहीं है। इस सम्बन्ध में, मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ। मुझे किसी प्रकार का वहम (भ्रम) नहीं है।''

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

"एकमात्र सारभूत वस्तु"

आन्तरिक पुकार, अभीप्सा तथा इसकी सिद्धि के लिये निरन्तर प्रयास करते रहना।

मुझे सदा ही ध्यान द्वारा अनुभूति पहले प्राप्त हुई और शुद्धि बाद में, उसके परिणामस्वरूप शुरू हुई। मैंने बहुतों को ध्यान के द्वारा महत्त्वपूर्ण, यहाँ तक कि मूलभूत अनुभव प्राप्त करते देखा है, पर उनके विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि उनका आंतरिक विकास बहुत हो चुका है।

मुझे मालूम नहीं 'क' ने क्या कहा अथवा किस लेख में कहा? वह लेख मेरे पास नहीं है। किंतु, उसका कहना अगर यह है कि कोई भी व्यक्ति तब तक सफलतापूर्वक ध्यान नहीं कर सकता, कोई अनुभूति नहीं प्राप्त कर सकता जब तक कि वह पवित्र और पूर्ण न हो जाय तो मैं इसे समझने में असमर्थ हूँ, यह मेरे अपने अनुभव के विरुद्ध है। मुझे सदा ही ध्यान द्वारा अनुभूति पहले प्राप्त हुई और शुद्धि बाद में, उसके परिणामस्वरूप शुरू हुई। मैंने बहुतों को ध्यान के द्वारा महत्त्वपूर्ण, यहाँ तक कि मूलभूत अनुभव प्राप्त करते देखा है, पर उनके विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि उनका आंतरिक विकास बहुत हो चुका है। क्या वे सभी योगी, जिन्होंने सफल रूप में ध्यान किया और अपनी अंतश्चेतना में महान् अनुभव प्राप्त किये, अपनी प्रकृति में पूर्ण थे? मुझे तो ऐसा नहीं लगता। इस क्षेत्र के पूर्ण-सार्वभौम सिद्धांतों पर मैं विश्वास नहीं कर सकता। कारण, अध्यात्म-चेतना का विकास अतीव विशाल एवं जटिल कार्य है जिसमें सब प्रकार की चीजें घटित हो सकती हैं और यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक मनुष्य के लिये यह विकास उसकी प्रकृति के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है और एकमात्र आवश्यक वस्तु है -- आन्तरिक पुकार, अभीप्सा तथा इसकी सिद्धि के लिये निरन्तर प्रयास करते रहना। इसकी परवाह नहीं कि इसमें कितना समय लगता है तथा क्या-क्या कठिनाइयाँ या बाधाएँ इसके मार्ग में आती हैं, क्योंकि और किसी चीज से हमारे अन्दर की अन्तरात्मा संतुष्ट नहीं हो सकती।

संदर्भ- श्री अरविन्द, 'अपने विषय में' पुस्तक से

www.the-comforter.org

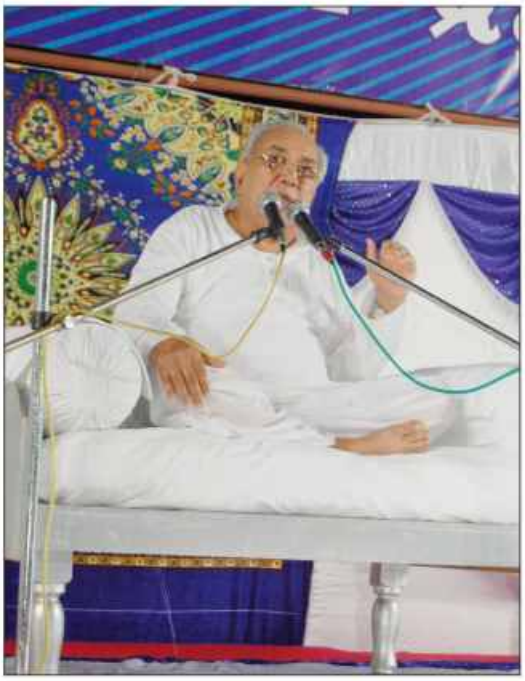

गुरु कृपा ही केवलम्

"ऐसे विशाल स्वरूप में उस परम सत्ता से साक्षात्कार कराने में केवल **संत सद्गुरु ही सक्षम हैं**। गुरु कृपा बिना यह कार्य पूर्ण रूप से असम्भव है। **'गुरु'**, ईश्वर का ही सात्विक स्वरूप हैं। **ठेट अगम से आई हुई आत्मा ही गुरु पद पर पहुँच पाती हैं।**

इस प्रकार के चेतन गुरु का आशीर्वाद प्राप्त होते ही जीवन में आनन्द की लहरें दौड़ने लगती है। तत्काल **सत्लोक** की विभिन्न सात्विक शक्तियों की प्रत्यक्षानुभूतियाँ होने लगती हैं, जीव माया की परिधि को अनायास गुरु-कृपा से लांघ जाता है।"

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
सिद्धयोग बड़ी पुस्तक पृष्ठ-192

आराधनारत साधकों के लिए कुछ सामान्य दिशा-निर्देश जो समय समय पर सद्गुरुदेव सियाग शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रमों में बताते थे।

- **ध्यान 15 मिनट ही करें। ज्यादा ध्यान करने पर शरीर में गर्मी बढ़ जाती है। हमारे ऋषि-मुनि इसलिए तो नंगे बदन हिमालय की कंदराओं में बैठकर ध्यान करते थे। जीवन की ''समरसता'' को बनाए रखने के लिए सिर्फ 15 मिनट ही ध्यान करें।**
- गृहस्थ जीवन के सभी कर्त्तव्यों का पालन करते हुए, ये आराधना करनी है।
- मंत्र जप ही इस आराधना का मुख्य आधार है। इसलिए हर समय सघन मंत्र-जप करते रहें।
- ये आराधना अपने आप में पूर्ण है, अत: अन्य जगह आस्था केन्द्रित नहीं होनी चाहिए।
- गुरुदेव के प्रति श्रद्धा, विश्वास, समर्पण व एकनिष्ठता होनी चाहिए।
- महिलाएँ तीसों दिन नाम-जप व ध्यान कर सकती हैं।
- सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में मंत्र कभी भी सुन सकते हैं।
- किसी भी नये व्यक्ति को प्रथम बार गुरुदेव की दिव्य वाणी में ही मंत्र सुनाएं, क्योंकि गुरुदेव की आवाज ही प्रभावी है। गुरुदेव की आवाज के बिना मंत्र प्रभावी नहीं होगा।
- तांत्रिक क्रियाएँ, जादु-टोने, ताबीज व भोपों आदि के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए।
- आप किसी भी समस्या के समाधान के लिए गुरुदेव से करूण प्रार्थना करें। गुरुदेव ही आपको, आपके अंदर से जवाब देंगे। साधक चाहे कितना ही पहुँचा हुआ हो, उनके प्रति श्रद्धा या उनसे ये नहीं कहना कि मेरी ये अमुख समस्या है, आप गुरुदेव से ध्यान में पूछकर बताओ कि इसका क्या हल हो सकता है? गुरुदेव ने कहा कि **''आप मेरे से अंतर्मन से जुड़ो, गुरु आपके अंदर बैठा है, वह आपको अंदर से हजार गुणा Correct (सही) जवाब देगा।''** इसलिए आप केवल मात्र गुरुदेव के प्रति ही निष्ठावान रहें। आस्था खण्डित नहीं होनी चाहिए।
- योगारुढ़ साधक की साधना की सफलता की पहली शर्त है-**''अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को लक्ष्य के रूप में न रखना।''**-श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां
- गुरुदेव द्वारा स्थापित एकमात्र संस्था का नाम-**अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर** है, पूरी दुनिया में इसी संस्था के बेनर तले ही इस मिशन का प्रचार कार्य करना है।
- गुरुदेव ने अपने मिशन के प्रचार-प्रसार के लिए 25 दिसम्बर 1997 को वेबसाइट (**www.the-comforter.org**) लॉन्स की, सो समस्त साधकगण सूचित रहें।

❖❖❖

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, शाखा–मुम्बई द्वारा अश्विनी हॉस्पीटल में प्रत्येक रविवार को आयोजित सिद्धयोग शिविर में ध्यान मग्न मरीज।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय–तापू, तहसील–औसिया में सिद्धयोग शिविर और कैलेण्डर वितरण। (14 जनवरी 2020)

शहीद सरदार भगत सिंह सभा स्थल नगर परिषद, बालोतरा (बाड़मेर) में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (16 जनवरी 2020)

www.the-comforter.org

रोगों से मुक्ति

यदि साधक चेतना से युक्त हो तो चाहे वह किसी भी महामारी ग्रस्त प्रदेश में चला जाये, गंदे नदी-नालों का पानी जो मिले सो पी ले, उसे कुछ भी न होगा, क्योंकि सजग स्वामी पर कौन हाथ डाल सकता है ? हमने सब जीवाणु और विषाणु तो वियुक्त किये, पर हमने यह नहीं जाना कि वे तो केवल निमित्त हैं और रोग विषाणु नहीं बल्कि वह शक्ति है जो उस विषाणु का प्रयोग करती है; और यदि हम विशद हों तो संसार भर के विषाणु हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते क्योंकि हमारी आन्तरिक शक्ति इस बिगाडु. शक्ति से अधिक बड़ी है।

भीतर की तामसिक शक्तियों व रोगों-नशों से लड़ने की शक्ति केवल सद्गुरुदेव सियाग प्रदत संजीवनी मंत्र के सघन जप और नियमित ध्यान से ही संभव है।

विचारशील मानस के तनाव और भिनभिनाहट से, प्राणिक मानस के अत्याचार और अशान्ति से, उसकी कभी समाप्त न होने वाली माँगों से, भौतिक मानस की मूढ़ता और आशंकाओं से जब हमारा पीछा छूट जाता है, तब हमें समझ में आना शुरू होता है कि यदि ये सारे बोझे लाद कर हम शरीर को थका न मारें, तब वह क्या चीज है, और हमें पता चलता है कि हमारा शरीर आज्ञाकारी, सहनशील और असीम सद्भाव से पूर्ण एक अद्भुत यन्त्र है।

यह ऐसा यन्त्र है जिसकी लोगों को बिल्कुल भी समझ नहीं और इसके साथ बहुत ही दुर्व्यवहार किया जाता है। हमारी सत्ता की इस पूरी सफाई में प्रथम तो हमें यह पता चलता है कि शरीर कभी बीमार नहीं होता, वह केवल जीर्ण होता है, परन्तु यह ह्रास भी शायद असाध्य नहीं - यह चीज हमें अतिमानसिक योग में पता चलती है।

शरीर बीमार नहीं पड़ा करता, यह चेतना में कमी है। मनुष्य जैसे-जैसे योग में प्रगति करता जाता है, वह देखता है कि सचमुच हर बार जब वह बीमार पड़ता है या कोई बाह्य 'दुर्घटना' ही होती है, सदा वह अचेतना या किसी दुर्वृत्ति का, किसी मानसिक गड़बड़ का फल होता है। इस दिशा में अध्ययन और भी रोचक हो उठता है क्योंकि योगमार्ग पर पग धरते ही, हमारे अन्दर कोई चीज सावधान हो जाती है, और पल-पल पर हमारी भूलों को और जो कुछ हम पर बीतती है उसका सच्चा कारण हमें दिखाती है, यहाँ तक कि हमारी उंगली पकड़ कर वहाँ टिका देती है, मानो 'कोई' हमारी इस खोज को बहुत ही महत्त्व दे रहा हो - कुछ भी छिपा नहीं रहता।

हम अपनी आन्तरिक अवस्था और बाह्य परिस्थितियों के बीच एक घनिष्ठ संबंध देखते हैं, जो कि दिन ब दिन स्पष्ट होता जाता है और कभी-कभी तो हम उसे देख अवाक् ही रह जाते हैं (उदाहरणस्वरूप बीमारियाँ हैं, 'दुर्घटनाएँ' हैं) मानो जीवन का प्रवाह अब बाहर से अन्दर की ओर नहीं रहा, अन्दर से बाहर की ओर हो गया; हमारी अन्तस्थिति हमारे बाह्य जीवन का निर्माण करती है, तुच्छ से तुच्छ परिस्थितियों तक का - सच तो यह है कि तुच्छ फिर कुछ नहीं रहता और लगता है मानो दैनिक जीवन संकेतों से भरी एक पहेली हो, जिन्हें हमें अभी बूझना है। सब कुछ परस्पर संबद्ध है, यह संसार एक चमत्कार है । जब हम परोक्ष दर्शन शक्ति, भूत-प्रेत दर्शन और 'लोकोत्तर' व्यापारों के ध्यान-चिन्तन को ही आध्यात्मिक जीवन समझ बैठते हैं, तब शायद हम बच्चों की तरह समझने में भूल कर जाते हैं-हम जैसा सोचते हैं उसकी अपेक्षा भगवान् हमारे कहीं अधिक समीप हैं, कल्पना की इन सारी सारहीन रंगीन उड़ानों से अधिक गंभीर परन्तु कम चकाचौंध पैदा करने वाला 'चमत्कार' है यह।

जिन छोटे-छोटे संकेतों से हमारा आमना-सामना होता है, उनमें से एक भी यदि हम समझ पायें, और जो अदृश्य बन्धन सब वस्तुओं को थामे हुए है, उसका यदि एक बार भी अनुमान लगा सकें तो दिव्य सोमरस का स्वयं पान करने की अपेक्षा हम इस महान् चमत्कार के अधिक समीप पहुँच जायें, क्योंकि चमत्कार शायद है यह कि भगवान् भी सहज-स्वाभाविक है। परन्तु हम उस ओर ध्यान नहीं देते।

अतः जीवन के प्रवाह में अन्दर से बाहर की ओर के इस दिशा परिवर्तन का साधक को पता चल जायेगा (और कारण इसका यही है कि अन्तर्वर्ती स्वामी चैत्य अपने कारावास से निकल आया है), वह इन दैनिक संकेतों को समझेगा और देख लेगा कि बाह्य

परिस्थितियों को अच्छी और बुरी, दोनों ही दिशाओं में गढ़ने की शक्ति हमारी अन्तर्वृत्ति को प्राप्त है।

जब हमारे अन्दर सामंजस्य की स्थिति होती है और हमारे कर्म हमारी सत्ता के गंभीरतम सत्य के साथ अनुरूप होते हैं, तब ऐसा लगता है कि कोई भी चीज हमारे सामने खड़ी नहीं रह सकती; जो **'असंभव'** बातें लगती थीं, वे तक विलीन हो जाती हैं, मानो **'प्राकृतिक'** नियम के स्थान पर कोई अन्य नियम लागू हो गया हो **(वास्तव में वह सच्ची प्रकृति है जो मानस और प्राण की उलझनों से बाहर निकल आई है)** और मनुष्य एक राजसीय स्वच्छन्दता का आस्वादन करना आरंभ करता है; परन्तु जब मानस अथवा प्राण की कोई गड़बड़ अन्दर होती है, तब मनुष्य देखता है कि यह गड़बड़ ही अनिवार्य रूप से परेशान करने वाली बाह्य परिस्थितियों का आह्वान करती है, जैसे बीमारी अथवा दुर्घटना का बलात् घुस आना।

इसका कारण स्पष्ट है; जब हमारी मन:स्थिति अच्छी नहीं होती, तब हमारे अन्दर से एक विशेष प्रकार के स्पन्द बाहर निकलते हैं, जो हमारी सत्ता के सभी स्तरों पर, स्वत: अपने समान अन्य सारे स्पन्दों को आमंत्रित करके उनसे संपर्क जोड़ लेते हैं; सब स्तरों की यह अस्तव्यस्तता बाह्य परिस्थितियों को गड़बड़ा देती हैं और सभी कुछ बिगड़ने लगता है। खराब आन्तरिक स्थिति केवल अवरोध ही पैदा नहीं करती, बल्कि साथ ही हमारा संरक्षक आवरण को भी क्षीण कर देता है जिसका हम पहले उल्लेख कर चुके हैं। इसका फल यह होता है कि स्पन्दनों की तीव्रता के द्वारा सुरक्षित होने के बदले हम संक्रमणीय हो जाते हैं - उस समय हम पर आक्रमण संभव है - हमारे संरक्षक आवरण को छलनी-छलनी करने या यों कहें उसे विलीन करने में अशान्ति के स्पन्द के समान अन्य कुछ नहीं है - और कुछ भी घुस आ सकता है ।

ध्यान रखिये कि आन्तरिक दुरावस्था छूत की तरह फैलती है; ऐसे लोग होते हैं जिनका साथ होने से सदा दुर्घटनाएँ या परेशानियाँ खिंच आती हैं। जब हमें दसियों बार वही एक अनुभव हो लेगा, जो कि आन्तरिक अवस्था के अनुसार एक साधारण जुकाम या मामूली जरा गिर जाने से लेकर एक भयानक दुर्घटना तक होना संभव है, तब हम अच्छी तरह जान जायेंगे कि न हमारा शरीर और न ही जिसे हम 'संयोग' कहते हैं इसके थोड़े भी जिम्मेदार हैं, और उसी कारण उसका इलाज कोई बाहरी दवा-दारू नहीं, बल्कि अन्तर्वृत्ति को फिर से ठीक करना, आन्तरिक सुव्यवस्था या संक्षेप में कहें तो चेतना है।

यदि साधक चेतना से युक्त हो तो चाहे वह किसी भी महामारी ग्रस्त प्रदेश में चला जाये, गंदे नदी-नालों का पानी जो मिले सो पी ले, उसे कुछ भी न होगा, क्योंकि सजग स्वामी पर कौन हाथ डाल सकता है ? हमने सब जीवाणु और विषाणु तो वियुक्त किये, पर हमने यह नहीं जाना कि वे तो केवल निमित्त हैं और रोग विषाणु नहीं बल्कि वह शक्ति है जो उस विषाणु का प्रयोग करती है; और यदि हम विशद हों तो संसार भर के विषाणु हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते क्योंकि हमारी आन्तरिक शक्ति इस बिगाडु. शक्ति से अधिक बड़ी है, अथवा कहना ठीक होगा कि हमारी सत्ता इस निम्न स्तर की स्पन्दतीव्रता से बहुत अधिक तीव्रता पर स्पन्दन कर रही है।

केवल समरूप वस्तुएँ ही अपने समरूप में प्रवेश पा सकती हैं। और यही कारण है कि पुरानी दूसरी बीमारियों की भाँति यदि हम कैन्सर को भी दूर कर लें तो भी हम उससे बीमारी की शक्तियों को दूर नहीं कर पायेंगे; जब उनका वर्तमान साधन रास्ते से हटा दिया जायेगा तो वे किसी अन्य वस्तु का, दूसरे निमित्त का, किसी और विषाणु का प्रयोग करेंगी।''हमारा चिकित्सा विज्ञान केवल ऊपरी सतह को ही स्पर्श करता है, स्रोत को नहीं।''

रोग एक ही है, **अचेतनता**। और ऊँचे उठ जाने पर, जब हम अपने अन्दर काफी **नीरवता** स्थापित कर

''हमारा चिकित्सा विज्ञान केवल ऊपरी सतह को ही स्पर्श करता है, स्रोत को नहीं।''

रोग एक ही है-अचेतनता। और ऊँचे उठ जाने पर, जब हम अपने अन्दर काफी नीरवता स्थापित कर लेंगे और मानसिक तथा प्राणिक स्पन्दनों को अपने चेतना मण्डल में प्रवेश करते समय देखने के योग्य हो जायेंगे, तब उसी तरह हम रोग के स्पन्दों को देख सकेंगे और घुसने से पहले ही उन्हें भगा देना, हमारे लिए संभव हो जायेगा।

www.the-comforter.org

लेंगे और मानसिक तथा प्राणिक स्पन्दनों को अपने चेतना मण्डल में प्रवेश करते समय देखने के योग्य हो जायेंगे, तब उसी तरह हम रोग के स्पन्दों को देख सकेंगे और घुसने से पहले ही उन्हें भगा देना, हमारे लिए संभव हो जायेगा।

श्री अरविन्द ने अपने एक शिष्य को लिखा था, यदि तुम अपने चेतना मण्डल-स्वरूप को पहचान सकते तो तुम विचारों, आवेगों, रोग के सुझावों अथवा रोग की शक्तियों को पकड़ सकते और उन्हें अपने अन्दर घुसने से रोक सकते हो।

व्याधियों की दो अन्य श्रेणियाँ भी जाननी आवश्यक हैं। वे हमारे भूलों का सीधा परिणाम नहीं होती। एक तो हैं **अवचेतन** के विरोध से उत्पन्न रोग (आगे चल कर अवचेतन की शुद्धि के प्रसंग में हम उनका विवरण देंगे) और दूसरे हैं वे रोग जिन्हें हम **'यौगिक रोग'** की संज्ञा दे सकते हैं। इनका कारण यह होता है कि हमारी चेतना के ऊर्ध्व स्तरों के विकास के साथ-साथ हमारी शारीरिक चेतना उसी गति से विकास नहीं कर पाती। उदाहरणतया यह बिल्कुल संभव है कि हमारी मानसिक अथवा प्राणिक चेतना काफी विशाल बन जाये और नवीन तीव्रताओं को ग्रहण करने लगे, जबकि हमारी शारीरिक चेतना पुरानी स्पन्द-गति पर ही अटकी रहे और तीव्रता के उस बढ़ाव को सहन न कर सके।

उसके परिणामस्वरूप सन्तुलन भंग हो जाता है, जो कि किसी बाह्य निमित्त, रोगाणु अथवा विषाणु के घुस आने द्वारा नहीं बल्कि आन्तरिक तत्त्वों के मध्य विद्यमान स्वाभाविक संबंधों के भंग होने से रोगों का कारण बन सकता है, जैसे विभिन्न प्रकार की अलर्जियाँ, रक्त के श्लैष विकार, इत्यादि, अथवा स्नायविक या मानसिक रोग। यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है चेतना की **ऊर्ध्वतर** शक्तियों के प्रति जड़तत्त्व की ग्रहणशीलता का, जो कि अतिमानसिक योग में एक गंभीर समस्या है।

यह भी कम से कम एक कारण है इसलिए श्री अरविन्द और श्री माँ ने हमारे इस भौतिक आधार, शरीर के विकास पर इतना बल दिया है; इसके बिना मनुष्य परमानन्द को प्राप्त कर सीधे परम ब्रह्म में भले ही चला जाये, परन्तु दिव्य तीव्रताओं और संपूर्णता को हमारे 'निम्न', मानसिक, प्राणिक और भौतिक राज्य में, दिव्य जीवन का निर्माण करने हेतु, उतार लाना संभव नहीं है।

www.the-comforter.org

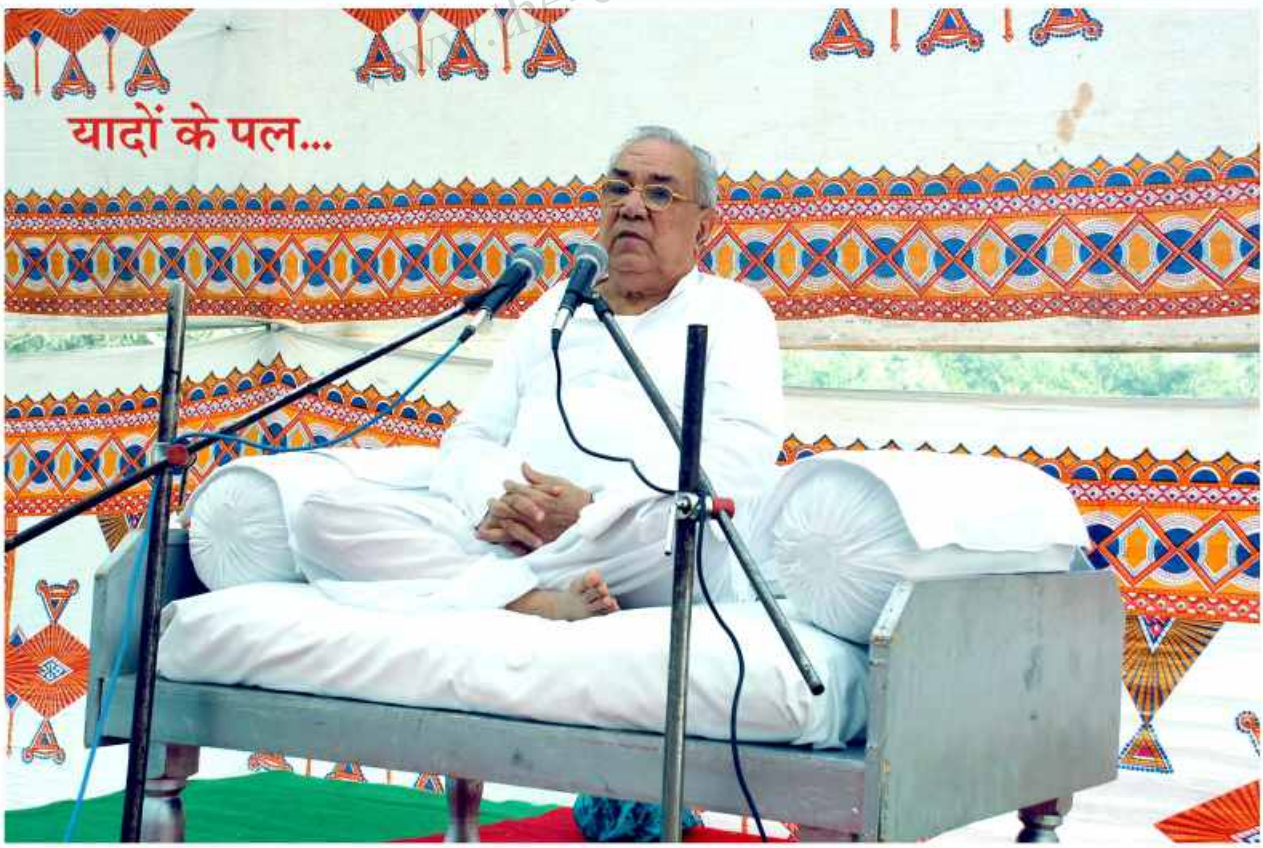

सद्गुरुदेव की चरण रज

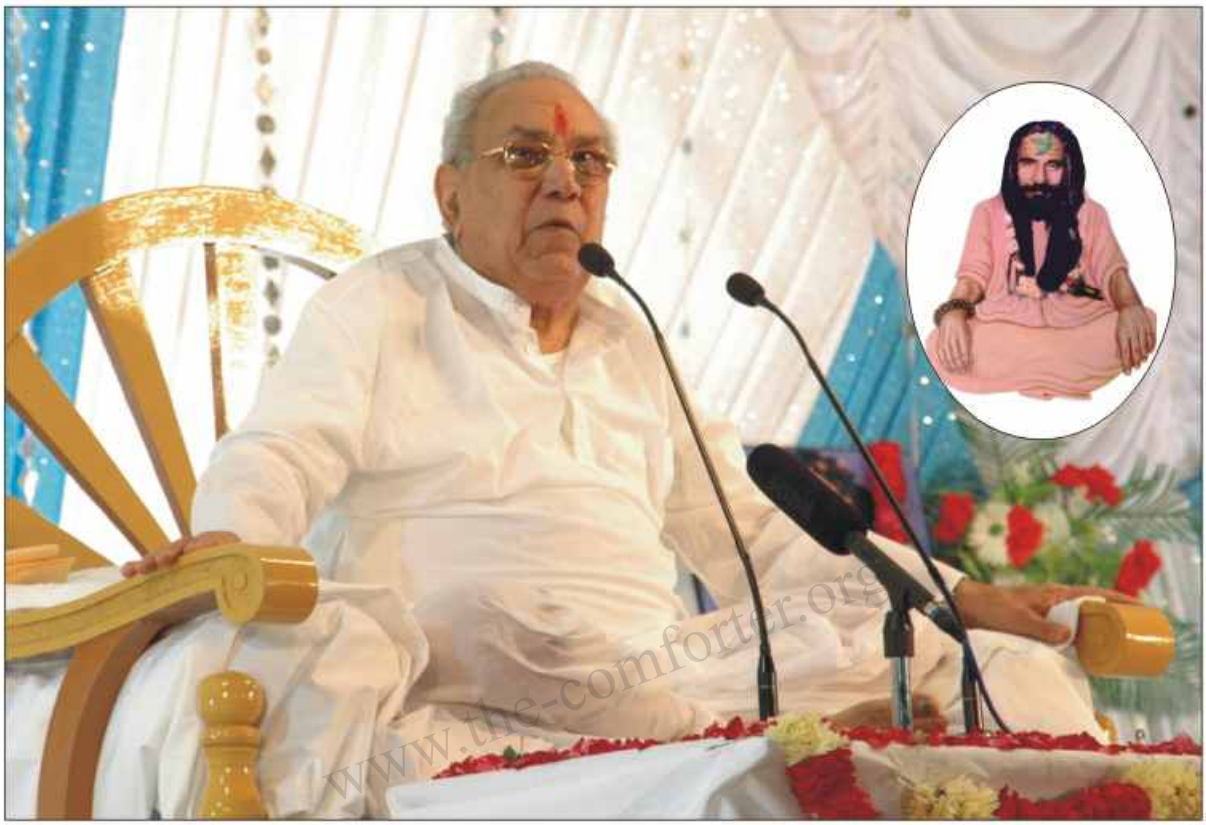

सौभाग्य से 1983 के मार्च-अप्रैल में संत सद्गुरुदेव (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी) के चरण रज माथे पर लगाने का सौभाग्य मिला। इससे जीवन में एक प्रकार से नई चेतना पैदा होकर जीवन अधिक आनन्दमयी हो गया। परन्तु मेरे जीवन में सुख का समय बहुत ही कम रहा है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

कठिनाई में

योग में जो बात अंत में जाकर सबसे अधिक काम की साबित होती है, वह है सच्चाई और उसके साथ-साथ इस पथ पर डटे रहने का धैर्य-बहुत से लोग इस धैर्य के बिना भी लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं, क्योंकि विद्रोह, अधैर्य, अवसाद, निराशा, क्लांति, श्रद्धा की सामयिक हानि इत्यादि के होने पर भी बाह्य सत्ता की अपेक्षा कहीं महान् एक शक्ति, आत्मा की शक्ति, अंतरात्मा की आवश्यकता का वेग उन्हें घने बादलों और कुहासे के अंधकार के भीतर से ढकेलता हुआ उनके लक्ष्य तक पहुँचा देता है।

अपूर्णताएँ बाधक हो सकती है और कुछ समय के लिये साधक को बुरी तरह गिरा भी सकती है; परन्तु वे स्थायी बाधा नहीं हो सकतीं। प्रकृति में कहीं कोई प्रतिरोध होने के कारण जो कभी कभी तमसाच्छन्न अवस्था आ जाती है, वह साधना में विलंब लाने का कहीं अधिक गंभीर कारण बन सकती है, पर वह भी सर्वदा नहीं टिक सकती।

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

www.the-comforter.org

तुम्हारे अंदर जो इतनी अधिक देर तक जड़ता का भाव (उदासी) बना रहता है, वह भी इस बात के लिए पर्याप्त कारण नहीं है कि तुम अपनी योग्यता या अपनी आध्यात्मिक भवितव्यता पर से विश्वास ही खो दो। मेरा विश्वास है कि साधना में बारी बारी से प्रकाशमय और अंधकारमय समय का आना-जाना योगियों का प्राय: सार्वजनिक अनुभव है और इसका अपवाद बहुत कम ही देखा जाता है। यदि कोई इस क्रिया के-जो हमारे अधीर मानव-स्वभाव के लिये अत्यंत अप्रिय है-कारण की खोज करे तो मेरी समझ में यह पता चलेगा कि इसके प्रधानतया दो कारण हैं। पहला कारण यह है कि मानव चेतना या तो ज्योति या शक्ति या आनंद के निरंतर अवतरण को सहन नहीं कर पाती अथवा उसे तुरंत ग्रहण करने और पचाने में असमर्थ होती है; उसे पचाने के लिये हर बार कुछ समय की आवश्यकता होती है; परन्तु यह पाचन क्रिया बाह्य चेतना के पर्दे के पीछे होती रहती है; जिस अनुभूति या उपलब्धि का अवतरण हुआ रहता है, वह पर्दे के पीछे चली जाती है और इस बाह्य या ऊपरी चेतना को बेकार पड़ी रहने तथा दूसरे नये अवतरण के लिये तैयार होने के लिये छोड़ देती है।

❖❖❖

आध्यात्मिक सत्ता की अधीनता

ही देश और दुनिया के लिए हितकर है

www.the-comforter.org

श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है, **"जब भौतिक सत्ता, आध्यात्मिक सत्ता की अधीनता स्वीकार करके उसके आदेशों का पालन प्रारम्भ कर देगी, उसी दिन धरा पर स्वर्ग उतर आएगा।"**

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

अपने गुरु श्री युक्तेश्वर जी से मेरी भेंट

''ईश्वर में श्रद्धा कोई भी चमत्कार कर सकती है, केवल एक को छोड़कर--अध्ययन के बिना परीक्षा में उत्तीर्ण होना।'' झुँझलाकर मैंने वह ''प्रेरणाप्रद'' पुस्तक बंद कर दी जिसे मैंने खाली समय में एक दिन उठा लिया था।

''लेखक का यह अपवाद कथन उसकी ईश्वर में श्रद्धा का पूर्ण अभाव दर्शाता है,'' मैंने सोचा। ''बेचारा ! रात-रात भर पढ़ाई करने में उसे अत्यधिक विश्वास है !''

मैंने पिताजी को वचन दे रखा था कि मैं अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई पूर्ण करूँगा। मैं परिश्रमी विद्यार्थी होने का दावा नहीं कर सकता। महीने पर महीने बीतते गये थे पर मैं क्लास रूम में कम और कोलकता के स्नान-घाटों के आस-पास सुनसान जगहों पर अधिक होता था। उन घाटों के पास स्थित श्मशान, जो रात में और भी अधिक भयावह बन जाते हैं, योगी को अत्यंत आकर्षित करते हैं। जिसे अमर तत्त्व की खोज करनी हो, उसे कतिपय अनलंकृत नरकपालों को देखकर विचलित नहीं होना चाहिये। विभिन्न प्रकार की अस्थियों से व्याप्त उस विषादालय में मानवी अपूर्णता उजागर होती है। इस प्रकार मेरा रात्रि-जागरण विद्यार्थियों के रात्रि-जागरण से भिन्न प्रकार का था।

हिन्दू हाई स्कूल की वार्षिक परीक्षा का सप्ताह तेजी से निकट आ रहा था। परीक्षा का यह समय भी भूत-प्रेतों से युक्त उन श्मशानों की तरह ही एक सुपरिचित दहशत मन में उत्पन्न करता है। फिर भी मेरा मन शान्त था। भूत- पिशाचों के क्षेत्र में जा-जाकर मैं एक ऐसे ज्ञान को खोद कर निकाल रहा था जो स्कूली कक्षाओं में कभी नहीं मिल सकता। परन्तु मेरे पास स्वामी प्रणवानन्दजी का कौशल नहीं था, जो एक ही समय में दो स्थानों पर आसानी से उपस्थित हो सकते थे। मेरा तर्क (यद्यपि अनेक लोगों को, अफसोस ! यह कुतर्क लगता है) यह था कि प्रभु मेरी दुविधा को समझकर मुझे उससे उबार लेंगे। विपतियों से तत्क्षण उबारने के ईश्वर के हजारों स्पष्टीकरणातीत कारनामों से भक्त के मन में ऐसी तर्कशून्यता आ जाती है।

''अरे, मुकन्द ! आजकल तो तुम्हारे दर्शन ही नहीं होते !'' एक दिन अपराह्न गड़पार रोड़ पर मेरी ही कक्षा के एक सहपाठी से अचानक भेंट हुई तो उस ने मुझ से कहा।

''ओह, नंतू ! लगता है स्कूल में मेरी अनुपस्थिति ने मुझे निश्चित तौर पर कठिन परिस्थिति में डाल दिया है।''मैंने उसकी स्नेहपूर्ण दृष्टि के आगे अपने हृदय का भार हल्का किया।

नंतू, के ये सहज-सरल शब्द दैवी आश्वासन बनकर मेरे कानों में उतरे। तत्परता के साथ मैं उसके घर गया। परीक्षा में जिन प्रश्नों के पूछे जाने की संभावना उसे प्रतीत हो रही थी, उनके उत्तर उसने मुझे समझा दिये।

'ये प्रश्न ऐसे दाने हैं जो अनेक भोले-भाले विद्यार्थियों को परीक्षा के जाल में फँसा लेंगे। मेरे उत्तरों को ठीक से याद करोगे तो तुम उस जाल से सही सलामत निकल जाओगे।''

जब मैं उसके घर से निकला तब काफी रात बीत गयी थी। उधार की विद्वत्ता से लबालब भरा हुआ, मैं पूरे भक्तिभाव के साथ प्रार्थना कर रहा था कि अगले कुछ संकटपूर्ण दिनों में वह पांडित्य मुझ में बना रहे। मुझे अपने विभिन्न विषयों में नंतू ने परीक्षा के लिये तैयार कर दिया था, परन्तु समयाभाव के कारण संस्कृत को भूल गया था। मैंने उत्कटतापूर्वक भगवान् को इस भूल की याद दिला दी।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैं चलते कदमों की लय पर अपना नया ज्ञान आत्मसात् करता हुआ सैर कर रहा था। रास्ते के छोर पर पहुँचकर कोने पर स्थित खाली भू-खण्ड की घास-पात में से मैं चल पड़ा कि अचानक मेरी दृष्टि कुछ छपे हुए बिखरे पड़े कागजों पर पड़ी। मैंने झपटकर कागज़ उठा लिये। मेरा झपटना सार्थक भी हुआ। मेरे हाथ में संस्कृत श्लोक थे ! उनका अर्थ लगाने के अपने उगमगाते प्रयासों में सहायता के लिये मैंने एक पंडित को पकड़ा। उनकी मधुर वाणी को उस प्राचीन भाषा के निनादी मधुर सौन्दर्य से भर दिया।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के बारे में

उसे आमिष की जरूरत होती है, जो मकड़ी की तरह जाल बिछाता है, जिस क्षण शिकार जाल को छुए, उसे पता लग जाता है और वह तुरन्त बंद हो जाता है और शिकार को पकड़ लेता है, उसे खाता और हजम कर लेता है और फिर और की प्रतीक्षा में पड़ा रहता है। ये क्रियाएँ ठीक मकड़ी की मानसिक बुद्धि की क्रियाओं जैसी हैं।

इनमें कुछ हेर-फेर है और **अनुकूलन** है तो पौधे की **निश्चलता** के कारण और जहाँ तक हम देख सकते हैं, वह केवल इस सर्वोच्च प्राणिक आवश्यकता और उसकी तुष्टि तक सीमित है। हम मकड़ी को मानसिक बुद्धि का श्रेय दें तो पौधे को क्यों न दें? मान लिया कि वह एकदम प्रारंभिक और किसी विशेष प्रयोजन के लिये है फिर भी लगता तो यह है कि एक ही प्राकृतिक शक्ति मकड़ी और पौधे में काम कर रही है, बुद्धिमानी के साथ किसी प्रयोजन के लिये साधन खोजती और साधन के कार्य पर निगरानी रखती है।

अगर पौधे के अंदर कोई मन नहीं है, तब अकाट्य रूप से मानसिक बुद्धि और यांत्रिक बुद्धि तत्त्वतः एक और समान चीज है। अपने सहारे से लिपटती हुई टहनी, शिकार को पकड़ता हुआ पौधा और अपने शिकार को पकड़ती हुई मकड़ी एक ही क्रिया-शक्ति के रूप हैं। हम चाहें तो उसे बुद्धि भले न कहें लेकिन वह स्पष्ट रूप में बुद्धि के समान वस्तु है। भेद है मन की तरह संगठित बुद्धि और उस असंगठित बुद्धि में जो मोटे तौर पर तात्त्विक शुद्धि के साथ और एक तरह से मन की क्रिया की अपेक्षा अधिक अचूक ढंग से कार्य करती है। इन तथ्यों के प्रकाश में यह कल्पना बहुत अधिक संभाव्य बन जाती है कि प्रकृति एक अनन्त प्रयोजनमूलक विवेकमय शक्ति है जो संगठन और व्यक्तित्वसे श्रेष्ठ होनेके कारण असंगठित और निर्वैयक्तिक है, जब कि उसके यांत्रिक होने की परिकल्पना केवल एक संभावना है। निश्चिति के अभाव में तर्क बुद्धि की माँग है कि हम संभव की अपेक्षा संभाव्य को और उग्र तथा विरोधाभासपूर्ण की अपेक्षा सामंजस्यपूर्ण और स्वाभाविक व्याख्या को स्वीकार करें

लेकिन क्या यह निश्चित है कि इस बुद्धि और उसके कार्यों में मन एक विशिष्टता और व्यक्तित्व है, जो मानसिक अहंकार से भिन्न है, जो मन के पुष्पन और सुविधा के अतिरिक्त और किसी भी रूप में एकदम अनुपस्थित है? **हमारा यही ख्याल है क्योंकि हम यह मानते हैं कि जहाँ चेतना के कोई पाशविक चिह्न नहीं हैं, वहाँ चेतना नहीं रह सकती और नहीं रहती। यह भी एक धारणा हो सकती है।** हमें याद रखना चाहिए कि हम पेड़ या पत्थर के बारे में, उनके बाहरी जीवन के चिह्न या निष्क्रियता के सिवाय कुछ नहीं जानते।

हमारा आंतरिक ज्ञान मानव मनोविज्ञान के तथ्यों तक ही सीमित है। लेकिन इस सीमित क्षेत्र में भी बहुत कुछ ऐसा है, जो हमें जल्दबाजी में नकारात्मक दावे करने से पहले गहरे चिन्तन और लंबे विराम के लिए बाधित करे। मनुष्य सोचता है कि वह सपने देखे बिना सोता है परन्तु हम जानते हैं कि उसके अंदर चेतना सारे समय काम करती रहती है। वह सपने देखता है, हमेशा सपने देखता रहता है। वह अपने शरीर और उसके परिवेश के बारे में कुछ नहीं जानता लेकिन वह शरीर अपने-आप जीवन के लिये आवश्यक सभी क्रियाएँ करता रहता है।

अगर मनुष्य अचेतन हो जाय या **समाधि** में हो तो हमें विभक्त सत्ता का यही आभास होता है। चेतना शरीर से अलग मानसिक रूप में सक्रिय रहती है और शरीर मानसिक दृष्टि से पेड़ या पत्थर की तरह रहता है लेकिन प्राणिक तौर पर वनस्पति की तरह सक्रिय रहता और क्रिया करता है। पेशी प्रतिष्टम्भ (केटेलेप्सी) इससे भी ज्यादा विचित्र तथ्य प्रस्तुत करता है जिसमें शरीर पत्थर की तरह मृत और जड़ होता है, वह पेड़ की तरह प्राणिक रूप से भी सक्रिय नहीं होता परन्तु मन अपने बारे में अपने माध्यम और परिवेश से पूरी तरह **अभिज्ञ** होता है, परन्तु परिवेश पर वह भौतिक रूप से क्रिया नहीं कर सकता।

इन उदाहरणों के होते हुए हम यह कैसे कह सकते हैं कि पत्थर में जीवन नहीं होता और पत्थर या पेड़ में मन नहीं होता? न्याय के आधार पर विज्ञान वनस्पति में मन या पत्थर में जीवन के होने का यह कहकर खण्डन करता है कि जहाँ जीवन का कोई बाहरी लक्षण न हो या सचेतन मन न हो वहाँ प्राण और मन नहीं होते-यह मिथ्या सिद्ध होता है।

संदर्भ-'मानव से अतिमानव ' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

सर्वशक्तिमान का हाथ

उस दयालु सर्व शक्तिमान ने झुक कर मेरा दाहिना हाथ अपने दाहिने हाथ में मजबूती से थाम लिया है। ऐसी स्थिति में थोड़ा सा प्रयास करने पर ही, मैं, इस भव सागर से बाहर निकल जाऊँगा। मुझे स्पष्ट समझा दिया गया है कि इसके लिए मेरा प्रयास नितान्त आवश्यक है, उसके बिना कार्य पूरा होना सम्भव नहीं है। **कुछ इसी प्रकार के दिशा-निर्देशों और आदेशों के सहारे अकेला ही चल पड़ा हूँ।**

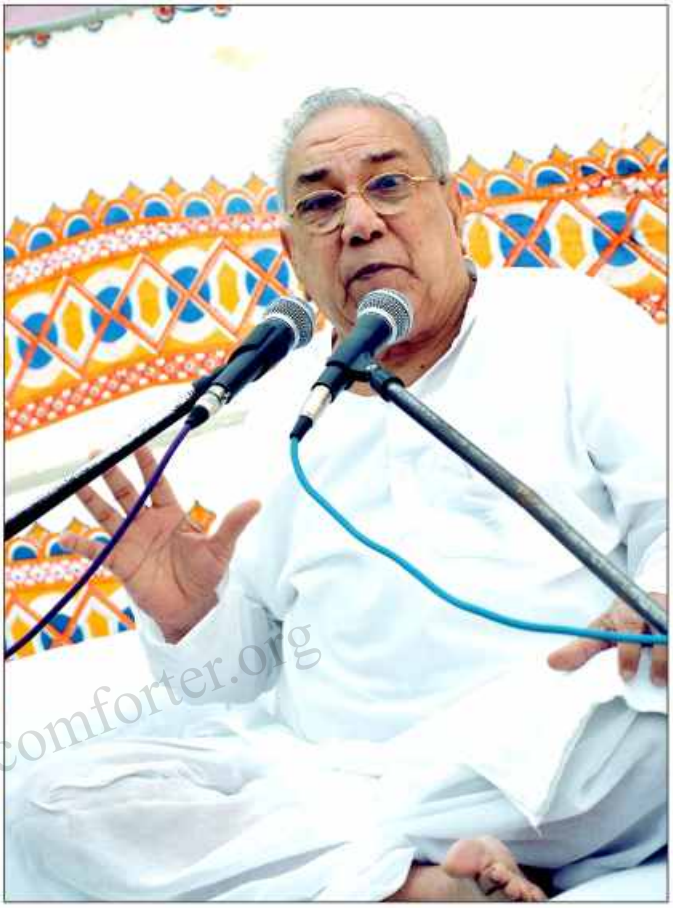

www.the-comforter.org

(ईश्वर एक से अनेक हुआ और उसके परिणाम स्वरूप इस सृष्टि का विकास हुआ। मानव रूप में अवतरित शक्ति की ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी इज्जत करते हैं। सिर्फ भगवान् ही अकेला चल सकता है। बाकी किसी की सामर्थ्य नहीं है। सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा। यह कार्य आत्मबल से पूरे विश्व में सम्पन्न होगा। गुरुदेव ने अपने कथन में लिख रखा है कि **''मैं अकेला ही निकल पड़ा हूँ।''** इसलिए साधक को जो कुछ मिलेगा, वो गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के प्रति समर्पण से ही मिलेगा। सद्गुरुदेव सियाग के सिवाय कहीं पर भी यदि आस्था विकेन्द्रित हो गई तो यह पूर्णता प्राप्त नहीं होगी। गुरुदेव ने कही बार कहा था कि यदि आस्था खण्डित हो गई तो फिर पार नहीं पड़ेगी।)

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

This way my Gurudev out of benevolence has handed over unlimited spiritual wealth to me, the complete knowledge of which I do not have as per my present condition. Sri Aurobindo has said clearly that any work of the world more or less is filled with spiritual power.

The so-called spiritualists of this era have divided the physical and spiritual world by drawing an imaginary line between them which is the main reason for the disappearance of spiritual knowledge. Sri Aurobindo has said clearly," When the Physical power accepts its dependence on the Spiritual power and starts obeying its order, that day heaven will descend on the earth."

Describing the experiences, he had during his imprisonment for one year, Sri Aurobindo has written," God has told me clearly that my power is working for the people who are struggling for independence and the people who are opposing it are also doing so due to the orders of my power. This way the entire world is active due to my energy. Even a leaf cannot move without my will."

This way we see that all the people of the world are mere puppets. The way Supreme Power makes us dance, we have to dance. This has been explained to me very nicely. Whatever has to happen is pre planned, based on this experience, I set out on all fronts without bothering at all for physical comforts.

All the direct experiences till date have completely assured me that no work can stop in the absence of physical amenities. When I glance at my situations from the beginning till date, I find that the power that is being exhibited through me by the supreme force does not have even a fraction of contribution from my intellect or any of the powers within me. Despit my not being interested in it, that power is making me dance to its tune. That is why whatever is getting done through me, I do not have any sense of doer ship for that. I am completely assured in relation to this. I am not in any kind of doubt.

I have prayed to my spiritual master and God in clear words that I am ready to dance in anyway but the profit and loss in it will be his. I am entitled to the wages for my labour only.

When people related to me, out of reverence, give me credit for any work, I tell them clearly that brother, whatever is happening is happening because of the God's order and grace of Gurudev.

I am just an ordinary being like you all, I have no right to take any credit for whatever is happening. My ambitions inspire me to do something else but due to certain situations, I am forced to do something else.

So, I am not at all ready to take this credit.

-Gurudev
Shri Ramlal ji Siyag
12th Feb'1988

The end...

www.the-comforter.org

परमसत्ता का अवतरण

(24 नवम्बर 1926)

यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि उस परमसत्ता का अवतरण हो चुका हैं और तय क्रमिक विकास के साथ अपना प्रकाश तेजी से संसार में फैला रही है। **जैसे सूर्योदय का समय नजदीक आता जाता है, तारों का प्रकाश क्षीण होता जाता है।** तारे अपनी सत्ता की इस गिरती हुई स्थिति को बिलकुल पसन्द नहीं करतेहैं, परन्तु उसके बावजूद इन सभी तारों के विरोध के, सूर्योदय का समय नहीं घटता।

इस प्रकार ज्यों ही वह उदय होता है, सभी तारों की सत्ता उनके यथास्थिति बने रहने पर भी लोप हो जाती है, संसार की आज ठीक वही स्थिति है।

विभिन्न मत-मतान्तरों और धर्मों के धर्म गुरुओं को यह स्थिति स्वीकार्य नहीं है, परन्तु तारों की तरह उनका भी कोई वश नहीं चलेगा। सभी पूर्ण असहाय होकर ताकते रह जाएँगे।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

FEBRUARY	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
					1	2	3
	4	5	6	7	8	9	10
	11	12	13	14	15	16	17
	18	19	20	21	22	23	24
	25	26	27	28	29		

MARCH	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
	31					1	2
	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12	13	14	15	16
	17	18	19	20	21	22	23
	24	25	26	27	28	29	30

□ 1996

22 MON

JANUARY

Appointments → "India's Rebirth." ←

8

"I write, not for the orthodox, nor for those who have discovered
9 a new orthodoxy, Samaj or panth, nor for the unbeliever. I write for those
who acknowledge reason but do not identify reason with western
10 materialism; who are sceptics but not unbelievers; who admitting
the claims of modern thought, still believe in India, her mission,
11 her gospel, her immortal life and her eternal rebirth."

12 → Out of the ruins of the west. ... "Sri Aurobindo"
"India's rebirth." (C. 1911)

1 PM "India of the ages is not dead nor has she spoken her last
creative word; she lives and has still something to do for herself
2 and the human peoples. And that which must seek now to awake
is not an anglicised oriental people, docile pupil of the west and
3 doomed to repeat the cycle of the occident's success and failure, but
still the ancient immemorable Shakti recovering her deepest self,
4 lifting her head higher towards the supreme source of light and strength
and learning to discover the complete meaning and a vaster form of her
5 "Dharma."

"Sri Aurobindo"

6 → Utthapana Siddhis ←

7 "I was having a very intense "Sadhana" on the vital plane and
I was concentrated. And I had a questioning mind; "Are such siddhis as
NOTES utthapana (levitation) possible?" I then suddenly found myself raised up
in such a way that I could not have done it myself with muscular exertion.
Only one part of the body was ~~st~~ slightly in contact with the ground and the
rest was raised up against the wall. I could not have held my body like
that normally even if I have wanted to and I found that the body remained
suspended like that without any exertion on my part."

"Sri Aurobindo"

→ Another spiritual experiences in Alipur Jail concerned sri Vivekananda:—
"It is a fact that I was hearing constantly the voice of sri Vivekananda
speaking to me for two weeks in the Jail in my solitary meditation and felt
his presence. The voice spoke only on a special and limited but very
important field of spiritual experience and it ceased as soon as it finished
saying all that it had to say on the subject." ... Aurobindo"

नितान्त अकेला विश्व समर में...

भौतिक जीवन का सम्बन्ध तो केवल जीविकोपार्जन तक का ही बहुत सीमित दायरे का था, उसमें भी भयंकर संकटों से गुजरना पड़ा। सुख नाम की वस्तु का आभास तक कभी नहीं हुआ।

इस आध्यात्मिक जीवन का क्षेत्र तो सारे विश्व का मैदान है। भौतिक जीवन की तरह ही इस जीवन में भी विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करना ही पड़ा, यह स्पष्ट नजर आ रहा है। **''केवल ईश्वर के सहारे नितान्त अकेले इस पूरे संसार के मैदान में बिलकुल विपरीत और विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने के लिए झोंक दिया गया हूँ।''** अर्जुन की तरह सभी रास्ते अवरुद्ध कर दिये गये हैं। मात्र एक ही संघर्ष का रास्ता खुला छोड़ा गया है, मुझे अकेले ही संसार भर की इस **आसुरी वृत्तियों** से जूंझना पड़ेगा, यह देख कर कभी-कभी भारी निराशा का अनुभव करता हूँ। परन्तु जब पीछे के जीवन पर नजर डालता हूँ कि किस प्रकार नितान्त अकेला ही विपरीत विषम परिस्थितियों को परास्त करता हुआ यहाँ तक आ पहुँचा हूँ तो कुछ हिम्मत बन्धती है।

इसके अलावा दूसरा सहारा उस अदृश्य असीम सत्ता का है, जिसने पहले ही मेरे जीवन के अन्तिम सांस तक के पूरे जीवन के दृश्य, टुकड़ों में सिनेमा के टेलर की तरह दिखा रखे हैं। और आज भी वह पूर्ण सत्ता पग-पग पर मेरा पथ प्रदर्शन कर रही है।

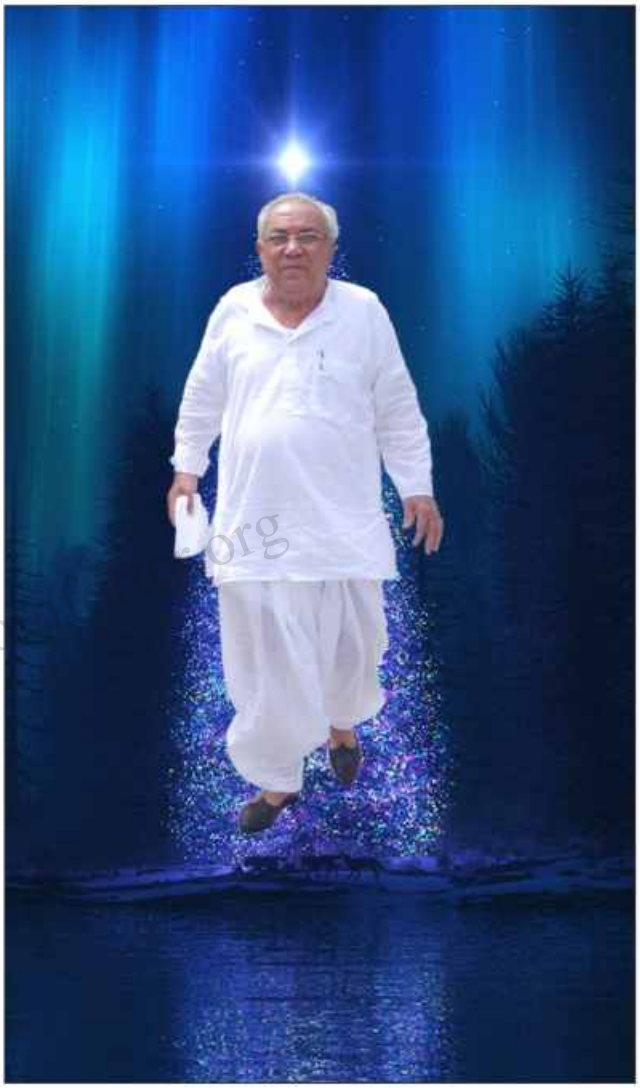

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे:- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- **आधिदैहिक, आधिभौतिक व आधिदैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (**नाश**) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसे:-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसे:-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसे:- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

24 नवम्बर 1926 को पृथ्वी का **''प्रधान रखवाला''** कल्कि अवतार का अवतरण हुआ और उन्होंने अपने पास से विश्व कल्याण के लिए **''महिमा का मुकुट''** अर्थात् संजीवनी मंत्र दिया है। जो साधक उनकी आज्ञा के अनुसार अपने हृदय में धारण कर चुका है और नाम जप की सिंचाई कर रहा है, उसके खेत रूपी हृदय कंवल पर वह कभी मुरझाने का नहीं अर्थात् मंत्र फलीभूत होकर साधक का सर्वांगीण विकास निश्चित है।

वे आत्माएँ धन्य हैं, जिन्होंने उन प्रधान रखवाले का सानिध्य और उनसे 'महिमा का मुकुट' प्राप्त किया है, वे उस पल की गरिमा और महिमा को समझें और अपने हृदय में उसको संजोकर रखें, ताकि वह मुरझा न जाये। यदि उनकी आज्ञा के विपरीत राह पर चल पड़े तो जीवन व्यर्थ ही चला जाएगा और वही कबीर वाली बात सिद्ध हो जाएगी कि **''जल में मीन प्यासी, मौहे देखत आवे हांसी।''** अर्थात् जल में यदि मछली प्यासी रह जाए तो यह एक बहुत बड़ा कौतुहल है, उसी प्रकार यदि कोई साधक उस **'प्रधान रखवाले'** से संजीवनी मंत्र पाकर भी परिवर्तित नहीं हुआ है तो बहुत बड़े दुर्भाग्य की बात है।

मेरा सबसे अनुरोध है कि प्रत्येक साधक अपने जीवन पर ध्यान दें, अपनी आराधना को मजबूत करें, मंत्र का सघन जप करें। यदि स्वयं के जीवन में वृत्ति परिवर्तन नहीं हुआ तो आपके कहने से किसी के जीवन में कोई बदलाव नहीं आएगा। पहले अपने आप को सुधारना होगा। पर निंदा या आलोचना, आराधनाशील साधक के लिए पतन का मार्ग है।

इस संबंध में गुरुदेव ने **'सत्संग का प्रभाव'** शीर्षक में बड़े विस्तार से उदाहरण देकर समझाया है कि किसी व्यक्ति की बात का प्रभाव दूसरे पर तभी पड़ता है, जब बताने वाला व्यक्ति उस बात पर चलता है।

सद्गुरुदेव से जो संजीवनी मंत्र मिला है, उसकी अनंत अपार महिमा है। इस मंत्र का सघन जप ही साधक के लिए कल्याणकारी है।

-संपादक

''नये लोक का सृजन''

www.the-comforter.org

''एक दिन जब श्रीमां ने अंतिम अलौकिक घटनाओं में से एक के विषय में श्री अरविन्द को बताना आरंभ किया तो वे विनोदपूर्वक बोले-'ठीक है, आप बड़े-बड़े चमत्कार कर दिखायेंगी, जिनसे सारी दुनिया में हमारा नाम फैल जाएगा। आप पृथ्वी की घटनाओं को उलट-पलट कर डालेंगी, मतलब कि (श्री अरविन्द मुस्कराये) हमें बड़ी कामयाबी होगी !' फिर वे बोले -'पर यह अधिमानसिक सृष्टि है, यह परम सत्य नहीं। हमें कामयाबी नहीं चाहिए। **हमें तो पृथ्वी पर अतिमानस की स्थापना करनी है, एक नये लोक का सृजन करना है।'** **(Creation of a new World)**

श्रीमां बताती हैं-आधे घंटे पीछे सब बंद हो गया। मैं कुछ नहीं बोली, एक शब्द तक नहीं कहा। आधे घंटे के अंदर-अंदर मैंने सब मिटा दिया, इन **साधकों और देवताओं के बीच संबंध काट दिया,** और सब नष्ट कर डाला। **कारण कि मैं जानती थी कि वह इतना आकर्षक था (हर समय हैरत में डालने वाली चीजें दिखाई दिया करती थीं)** कि जब तक वह बना रहेगा, उसे जारी रखने को मन ललचाता... मैंने सब मटियामेट कर दिया। उसी क्षण हम फिर से एक नये आधार पर रवाना हो गये।''

संदर्भ-'चेतना की अपूर्व यात्रा' पुस्तक के पृष्ठ-350 पर 'रूपान्तरण' शीर्षक से

(जो साधक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की बताई आराधना कर रहे हैं, उनको विशेष सावधानी रखनी चाहिए कि इस मार्ग में पथ से भटकाने के लिए कई आकर्षक और मन को लुभाने वाली घटनाएँ घटती हैं। अपने आध्यात्मिक उत्थान के लिए गुरुदेव द्वारा बताए संजीवनी मंत्र का सघन जप करें, आराधना को उत्साहपूर्वक बनाए रखने के लिए गुरुदेव का प्रवचन सुनें, जो संस्था के यू-ट्यूब चैनल (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) पर उपलब्ध है)। पूरी दुनिया में एक ही प्रभावशील वाणी है-**समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का प्रवचन**। इसलिए जो भी साधक गुरुदेव के मिशन का प्रचार प्रसार करना चाहते हैं, वे यथा संभव गुरुदेव की वाणी का प्रचार करें। गुरुदेव से बढ़िया कोई नहीं समझा सकता। और गुरुदेव का प्रवचन भी तभी समझ में आता है, जब उनकी वाणी को समझनेके लिए करूण प्रार्थना की जाएं-पूर्ण एकाग्रता, सच्ची निष्ठा और समर्पण भाव से सुना जाए।)

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 001 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा कोटा द्वारा राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय रंगबाड़ी, कोटा में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (23 जनवरी 2020)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित यौगिक क्रियाओं की विभिन्न मुद्राओं में साधक

''संजीवनी मंत्र'' और गुरुदेव सियाग की ''तस्वीर'' का कमाल

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

_____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी